जीवन mag

अंक-6 **April-July 2014 Joint Issue**

www.jeevanmag.com

India's first online bilingual magazine by students.

हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में...

हर आयुवर्ग के लिए एक संपूर्ण पत्रिका

Editor-In-Chief
Akash Kumar

Executive Editor
Nandlal Mishra

Associate Editor
Abuzaid Ansari

Team JeevanMag.com

Editor-in-chief

Akash Kumar is a student of class XII Science at Jamia Millia Islamia, New Delhi. He hails from Motihari in Bihar. Fondly called Man Of Sky by his friends, he is a passionate reader.
Email- akashmanofsky@gmail.com Facebook- www.facebook.com/akashmanofsky

Executive Editor

Nandlal Mishra is pursuing B.Tech in Humanities (2nd year) from Delhi University. He is basically from Samastipur in Bihar. He is fondly called Sumit by his friends.
Email- nandlal.sumit@gmail.com Facebook- www.facebook.com/sumit.nandlal

Associate Editor

Abuzaid Ansari is a student of class XII at Jamia Millia Islamia, New Delhi. Basically from the city of Nabobs- Lucknow, Zaid traverses his pen in Urdu & Hindi with the same influence.
Email- abuzaidansaari@gmail.com Facebook- www.facebook.com/abuzaid.786

EDITORIAL BOARD MEMBERS

Aminesh Aryan (B.A Hons. 1st year- Political Science, Banaras Hindu University, Varanasi)

Anamika Sharma (Diploma in Architecture, G.P.S Sundarnagar, Himachal Pradesh)

Kuldeep Kumar
(XII Science, Jamia Millia Islamia, New Delhi)

Kumar Shivam Mishra
(BA Hons. English, Commerce College, Patna)

Akshay Akash, Ashish Suman, Santosh
(B.Tech in Humanities- 2nd Year, Delhi University)

Raghavendra Tripathi (B.Tech in Innovation with Maths. & IT, 3rd year, Delhi University)

PUBLIC RELATION OFFICERS

Aryan Raj (XII Science, Allen Career Institute, Kota)

Faisal Alam & Rishabh Amrit
(XII Science, Shantiniketan Jubilee School,Motihari)

Aashutosh Pandey
(XII Science, M.S. college, Motihari)

Alok Kumar Verma
(XIIth Science, Lucent international school, Patna)

Cover Page Source- http://beehiveartsalon.blogspot.com
Quotes at the bottom of each page- **Shiv Khera**

Publisher- Blue Thunder Student Association (Affiliated to VIPNET, Govt. Of India), C/O Vijay Kr. Upadhyay, West of Dr. Shambhu Sharan, Belbanwa, Motihari-845401, Bihar.
Facebook –www.facebook.com/jeevanmag & www.facebook.com/bluethunderstudentassociation
Twitter- www.twitter.com/jeevanmag Email ID- jeevanmag@gmail.com
Delhi Contact- Nandlal Mishra, VKRV Rao Hostel, University of Delhi, New Delhi Phone- +91 9631021440

FIRSTLY & FOREMOSTLY

Hello friends,
Team JeevanMag is here with the sixth edition of this unique initiative- India's first online bilingual magazine by students. It's 1 AM & I am busy writing (Directly typing) this editorial note. I forgot to write this special stuff at time & well, you can see what the outcome is…Time and Tide wait for none.
We plan to go bimonthly now & for that we are restructuring our organisation. We are aspiring, setting new goals & then gradually achieving them. Abuzaid Ansari is now the associate editor of Jeevan Mag & that's a big change. I met this guy in school library & the interlocution turned out to be profound & delightful to both of us. Apart from being a pragmatic poet, he has got managerial skills too. I am sure that Nandlal Bhaiya (Executive Editor, Jeevan Mag) would get an exceptional companion in him. I can bet that he is making future plans for Jeevan Mag even as you read this issue.
Change is the law of nature & that's what happenned in the political arena too. The recent Loksabha elections gave a clear majority to BJP-led NDA making Mr. Narendra Modi the Prime minister of the country. The Bharatiya Janata Party got majority on its own making it solely responsible for whatever will happen in the power blocks of Delhi. Historical mandate, unputdownable government & Great responsibility!!! It has been more than 2 monthes of the government & meanwhile, a great volume of water would have flown through the Ganges. The track record of the government has been an average one & Mr. PM understands that the commonfolk is watching out his each & every move.

This time also Team JeevanMag has tried to provide you with a complete edutaining package. From poems to memoirs & from debates to stories, we have it all for you. Mark Twain once said, "I CAN LIVE FOR TWO MONTHES ON A GOOD COMPLIMENT." Compliment is the essential fuel to keep Jeevan Mag going on. Feel free to give us your suggestions. Mail me at- akashmanofsky@gmail.com

Affectionately Yours,

Akash Kumar
Editor-in-Chief
JeevanMag.com

जीतने वाले अलग चीजें नहीं करते, वो चीजों को अलग तरह से करते हैं.

काव्य सुधा

बेटियाँ

प्रतिक्रियाएँ-बहसें,
बड़बड़ाना-गुस्साना,
उबते ही-
पन्ने की-सी पलट देना,
दैनिक समाचार-
पत्रों जैसी;
सबरंग बातें-
सुनाई जाती हैं।
क्या बेटियाँ-
इसीलिए पराई बताई जाती हैं?

सपना

जीना सपनों को,
सपनों में जीना;
जीवन का सपना
मेरा वह सपना।

ममता किरण

शोधार्थी (हिन्दी)
बिहार विवि, मुजफ्फरपुर

मुसाफ़िर

अंधेरी रात,
पैदल मुसाफ़िर,
अकेले सुनसान सी सड़क
की ओर कदम बढ़ाता।

थका हारा,
प्यासा,
विचलित,
डसती हुई तनहाई।

कोसों दूर मंज़िल,
उसी की तलाश में,
उत्सुक,
आवारा।

लौ की भांति
टिमटिमाती,
आशा की किरण,
दिखी और बुझी।

जोश,
उत्साह,
साहस,
सब धरे के धरे रह गये।

अभिनव सिन्हा

कक्षा 12वीं foKku
अररिया पब्लिक स्कूल, अररिया
www.facebook.com/abhinav.d.cool

विप्लव- उनकी यादों में

ये आंसू पलकों पे आने दो ज़रा
इन्हें ना रोको बहने दो ज़रा।
ये आँखो मे बसा प्यार हैं
रिश्तों का एहसास हैं।
कुछ वायदे हैं,
कुछ कसमें हैं,
वो पल हैं जब पल-पल हम साथ थे
वो बीते कल हैं जब हाथ में हाथ थे।
इन्हें अब बहने दो ज़रा।

इन्हें ना रोको,
इन्हें ना पोंछो,
उनके साथ चले जाने दो ज़रा।
जो लौटने की बात कह
अनंत के राही हो गए।
क्या है अनंत में?
जो उन्हें भा गया
अपनी हाथों जो दुनिया बसाई
उन्हे बह जाने दो ज़रा।

ना रोको यह दर्द
जो खुशी, जो प्यार दिल में हैं
पलकों पे आने दो ज़रा।
यह जिनकी अमानत हैं
उनके साथ जाने दो ज़रा।
ये आँसू पलकों पे आने दो ज़रा।

अमिनेष आर्यन

राजनीतिशास्त्र स्नातक (प्रथम वर्ष)
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
www.facebook.com/aminesh.aryan

जीतने वाले लाभ देखते हैं, हारने वाले नुकसान.

चिंतन-मनन

इंटरव्यू का इंटरव्यू

-विकास आनंद झा

दो-तीन दिनों से मेरे कान पक गये कि वैदिक जी एक आतंकवादी से मिले और ये काम तो बिना ISI या सरकार की सहायता के किसी पत्रकार के लिए संभव नहीं है. हर टीवी चैनल पे, हर अख़बार में यहीं चर्चा है. विपक्ष सरकार को घेर रही है और सरकार अपने आप को पाक-साफ़ बता रही है जैसे उनका इस पूरे मामले से कोई नाता ही ना हो. सदन मे हंगामेबाज़ी ,सोशियल साइट्स पे कमेंटबाज़ी और टीवी पे बहसबाज़ी हो रही है. सड़कों पे पुतले फूंके जा रहे हैं. सबको लगता है की शायद इससे पहले कोई आदमी मिला ही नही टेररिस्ट से. अक्सर ये चर्चा हमें फिल्म स्टार्स और अंडरवर्ल्ड के संबंधों के बारे में सुनने को मिलती है. (संजय दत्त, अनिल कपूर, सलमान ख़ान -दाऊद इब्राहिम). राहुल गाँधी वैदिक जी को RSS का आदमी बता रहे हैं तो कुछ भाजपा नेता कह रहे हैं कि राहुल पहले ख़ुद की पार्टी के बारे में पड़ताल कर लें.

इन सब बातों को छोड़ दें तो एक पत्रकार को पूरा हक़ है कि अपने काम को गोपनीय तरीके से अंज़ाम दे पर जब बात राष्ट्रीय सुरक्षा की हो और यह एक गंभीर मुद्दा बन गया हो तो ये वैदिक जी के लिए परेशानी का सबब बन सकती है. हम सभी ये जानते है की मीडिया हमारे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ होती है और मीडिया से जुड़े किसी भी संगीन मामले पे सरकार को सजग हो असरकार कारवाई करनी चाहिए. बाकी इन सभी घटनाओं ने पत्रकारिता को किस पैमाने पे लाकर खड़ा कर दिया है ये हम सभी अपनी आँखों से देख रहे हैं. मुझे याद है मैंने कुछ साल पहले BBC के एक पत्रकार की नक्सलियों से बातचीत रेडियो पर सुनी थी. कई पश्चिम के पत्रकारों द्वारा लिए गये आतंवादियों के इंटरव्यू हमने पत्रिकाओं में पढ़ीं भी हैं. ये वो पत्रकार होते हैं जो निर्भीक और निष्पक्ष होकर पत्रकारिता किया करते हैं. पर यहाँ माज़रा कुछ और ही है- एक ओर जहाँ पाकिस्तान के एक चैनल को दिए गये इंटरव्यू मे वैदिक कश्मीर को अलग होने देने पर अपनी सम्मति जाहिर करते है तो दूसरी तरफ़ हिन्दुस्तान में कहते हैं कि ऐसा अगर होगा तो मेरे सर को धड़ से अलग करने के बाद होगा. ये सारी बातें भारतीय मीडिया की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिन्ह खड़े करती है. वैदिक जी के इस कथित इंटरव्यू पर सवाल भी उठता है जो कि किसी भी जर्नल मे प्रकाशित नहीं हुआ. ये कैसा इंटरव्यू है??? साथ ही कश्मीर मुद्दे पर अपनी प्रतिक्रिया देकर उन्होने अपने लिए एक और मुसीबत खड़ी कर दी. वैदिक जी के साथ ना तो हिन्दुस्तान के पत्रकार आ रहे हैं और पाकिस्तान के पत्रकार भी इस मुद्दे पर उनके साथ खड़े नही दिख रहे हैं.

अब तो बस इनके इंटरव्यू का इंटरव्यू हो रहा है.

लेखक जीवन मैग के जनसंपर्क अधिकारी हैं तथा शैक्षिक सोशल नेटवर्किंग साईट कुंज के संस्थापक CEO हैं. आप फिलहाल महर्षि अरविन्द इंजीनियरिंग कॉलेज, जयपुर से बी.टेक कर रहे हैं तथा पूर्वी चम्पारण, बिहार से ताल्लुक रखते हैं.

http://www.koonj.tk

www.facebook.com/vikash.jha

यदि आपको लगता है कि आप कर सकते हैं - तो आप कर सकते हैं! अगर आपको लगता है कि आप नहीं कर सकते - तो आप नहीं कर सकते! दोनों ही सूरतों में आप सही हैं!!!

कश्मीर में सेना

- कुलदीप कुमार

मुझे इस बार गर्मी की छुट्टियों में कोलकाता जाने का मौका मिला। वहां मेरे ठहरने की व्यवस्था आर्मी कैंप में थी। अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस कैंप बहुत मनभावन लगा। ये अलग बात है की तपिश के कारण परेशानियों का सामना तो करना ही पड़ा। फिर भी अपने घुमक्कड़ स्वभाव के अनुरूप लगभग सभी मशहूर जगहों यथा, बेलूर मठ, विक्टोरिया मेमोरियल, दक्षिणेश्वर काली मंदिर, कोलकाता और हावड़ा ब्रिज, साइंस सिटी, कोलकाता विश्वविद्यालय और प्रेसीडेंसी कॉलेज आदि घूमने का मौका निकाल ही लिया। महलों का ये शहर अतीत को समेटे आधुनिकता की ओर अग्रसर है। मेट्रो और ट्राम तो कोलकाता की शान हैं। मेरे अंदर जानने की जिज्ञासा जगी कि थलसेना यहाँ कौन-कौन से कार्यों के लिए तैनात है। मुझे बताया गया कि बगल में हुगली नदी में खड़े जहाजों की देखभाल थलसेना के ही ज़िम्मे है। जाकर देखा तो बहुत पुरानी लोहे की माध्यम आकार की चार जहाजें खड़ी थीं। चार जहाजों की देखभाल के लिए लगभग ३०० सेना के जवान और प्रति साल करोड़ों का खर्च। उत्सुकता और बढ़ी तो ये भी जानना चाहा की आख़िर जहाज का यहाँ क्या काम है। पता चला कि यदि बांग्लादेश से युद्ध छिड़ा तो इसका इस्तेमाल यातायात के लिए किया जा सकता है। मुझे यह भी बताया गया की शायद ही इसकी ज़रुरत पड़े।

सेना के लगभग सभी जवान तीन या छह साल कश्मीर में गुज़ार चुके थे। मसला जब कश्मीर का चला तब लगभग सभी जवानों की याद कड़वी ही थी। कश्मीर में सेना का ये हाल सुनकर मुझे भी सोचने पर विवश होना पड़ा। सद्भावना मिशन के तहत कश्मीरी लड़कों की पढाई की समुचित व्यवस्था आर्मी स्कूल में- वो भी मुफ्त। मरीज़ों के लिए सेना अस्पताल बिलकुल फ्री। छह महीने राशन फ्री छह महीने नाम मात्र के पैसे पर। आर्मी वालों के लिए भी कश्मीर में अलग नियम-कानून। सेना के जवानों की बन्दूक की नाल नीचे से ऊपर नहीं उठनी चाहिए। भीड़ में ग़र कोई आतंकवादी दिख जाये तो मारना नहीं है हाँ, अकेले में दिखे तो सिंगल शॉट में मारना है और वो गोली भी आतंकवादी को ही लगनी चाहिए। किसी आम आदमी को लग गयी तो सेना के उस जवान को अपनी छुट्टियों में सिविल कोर्ट जा कर मुकदमा लड़ना पड़ेगा। फ़ौज़ की कोई ज़िम्मेदारी नहीं। मतलब साडी छुट्टियां बर्बाद, विद्रोह का सामना अलग से। प्रायः सेना में गलती करने वाले का कोर्ट मार्शल अंदर ही होता है पर कश्मीर के मसलों में नहीं। जवानों को अलगाववादियों के पत्थरों की मार सहनी पड़ती है और उस स्थिति में भी छिपकर जान बचने के सिवा उनके पास कोई चारा नहीं होता। पेट्रोलिंग रात १ से ४ के बीच होती है ताकि अलगाववादियों के प्रकोप का सामना न करना पड़े। एक जवान ने तो यहाँ तक कहा कि कुछेक लोग

आतंकवादियों को दामाद की तरह घर में रखते हैं। सेना ये सारी बातें जानते हुए भी कुछ नहीं कर पाती। आतंकवादियों के लाश तक की स्थानीय लोग मांग कर देते हैं। एक सैनिक ने कहा कि वरिष्ठ अधिकारी कहा करते हैं कि बेटा कश्मीर आये हो तो मौत से खेलना तो है ही किसी तरह गाड़ी में छिपकर तीन साल का समय निकल लो, फायदे में रहोगे। कश्मीर में सेना द्वारा इतनी सुविधाएँ उपलब्ध करने के बावजूद ऐसी दुर्भावना बहुत ठेस पहुंचती है। सीमा पार से प्रायोजित आतंकवाद को अलगाववादियों का प्रश्रय मिला हुआ है। एसी में रहने वाले और कारों पर चलने वाले सिविल सोसाइटी के भद्रजन मानवाधिकारों पर होहल्ला तो बहुत मचाते हैं पर हकीकत में वे यथार्थ से बहुत दूर हैं। क्या मानवाधिकारों के घेरे में बस वे अलगाववादी आते हैं जिन्होंने हिंसा से घाटी को नर्क बना रखा है? क्या उन सैनिकों का कोई मानवाधिकार नहीं जो अपनी जान की बाज़ी लगा माँ भारती के अखंडता की रक्षा कर रहे हैं? कश्मीर की समस्या का समाधान नितांत आवश्यक है।

लेखक जीवन मैग की संपादन समिति के सदस्य हैं। आप जामिया मिल्लिया इस्लामिया में विज्ञान संकाय से कक्षा बारहवीं के छात्र हैं तथा मोतिहारी, बिहार से ताल्लुक रखते हैं।

www.facebook.com/kuldeepxcellent

कार्टून कोना

अनिल भार्गव

KAUN BANEGA CROREPATI

अच्छे दिन कब आएंगे..?

A: अभी नहीं

B: कभी नहीं

C: यही है अच्छे दिन

D: जब तक भाजपा है तब तक नहीं

cartoonistanil@gmail.com

चरित्र का निर्माण तब नहीं शुरू होता जब बच्चा पैदा होता है; ये बच्चे के पैदा होने के सौ साल पहले से शुरू हो जाता है।

नया भारत

-आकाश कुमार

इंतेहा हो गयी इंतज़ार की! स्टेशन पर खड़े लोग भारतीय रेल को 'शुद्ध भोजपुरी' में गलियाते हुए लेट ट्रेन की राह देख रहे थे। प्रतीक्षा के बाद जब ट्रेन आई तो धक्का-मुक्की का दौर शुरू हो गया। हमने किसी तरह अपने 'वेटिंग 5' के टिकट पर खीस निपोरते हुए सीट ली। पर डर यह कि हमें ज़ल्द ही बेदखल न कर दिया जाये। कई छोटे-बड़े स्टेशन होते हुए ट्रेन एक अदने से स्टेशन पर आ रुकी। परन्तु वह स्टेशन ऐसे पुलकित न हुआ जैसे कोई ग़रीब मेज़बान किसी बड़े, अभिजात्य मेहमान को पाकर होता है। कारण कदाचित यहीं रहा होगा कि इस बड़ी ट्रेन को अक्सर क्रासिंग के कारणवश उस छोटे स्टेशन का आतिथ्य स्वीकारना पड़ता होगा।

ख़ैर, सामने ही दूसरी ट्रेन लगी है। मैंने सर उठकर देखा तो दिखाई पड़ा 'केवल महिलाएं' लिखा हुआ डब्बा जिसमे न के बराबर भीड़ थी। उसमें बैठी एक हमउम्र तरुणी से नज़रें मिल गयीं और स्वाभाविक रूप से झेंप कर उसने अपना सर झुका लिया। उसके बगल में बैठा एक छोटा बच्चा, जो शायद उसका भाई रहा होगा, भुट्टे खा रहा था। बालसुलभ मुस्कान के साथ उसने मेरी ओर देखा और मैंने भी उसका ज़वाब भीनी मुस्कान के साथ दिया।

"भईया, भईया... जूता पॉलिश करवाएंगे?"- नीचे से आ रही इस आवाज़ ने मेरी तन्द्रा को भंग कर दिया। देखा तो एक ग़रीब, फटेहाल, कमउम्र लड़का हाथ में पॉलिश व ब्रश लिए ट्रेन की फर्श पर बैठा था। बदहाली के बावज़ूद आँखों में आशा तथा चेहरे पर चमक ने उसकी क्षीणकाय काया को अलग रूप दे रखा था।

"ये तो पढ़ने की उम्र है!"- अनजाने में मेरे भाव शब्दों का रूप ले प्रस्फुटित हो उठे।

"पढता हूँ भईया! चौथी में हूँ। जोड़, घटा, गुना, भाग- यहाँ तक कि पढ़ना भी आता है। मैडमजी मुझे बहुत मानती हैं।"- कहते हुए उसका चेहरा गर्व से खिल उठा। मेरे हाथ से अख़बार ले पढ़ कर उसने इस बात की तस्दीक़ कर डाली।

"तो फिर ये काम?"- हर्ष मिश्रित आश्चर्य से मैंने पूछा।

उसका खिला चेहरा ऐसे बुझ गया जैसे बिजली टूट कर गिरी हो। "बापू बीमार हैं। घर में पैसा नहीं है। अब तो स्कूल भी छूट गया है।"

"ऐसे ऐसे बहुत देखे हैं!"- एक सहयात्री ने निहायत ही बेहूदाना अंदाज़ में तंज कसा।

मेरा गुस्सा जाग उठा और उम्र का अंतर विस्मृत करते हुए मैंने उन्हें डांट पिला दी। - " आपको टांग अड़ाने का निमंत्रण किसी ने नहीं दिया। लड़का भीख नहीं मांग रहा, मेहनत की रोटी तोड़ रहा है।" शालीनता के दायरे में रह मैंने साहब को खूब खरी-खोटी सुनाई।

लड़के से जूते पॉलिश करा एक पचास का नोट दिया जिस पर वह बाकी रुपये लौटाने लगा पर मेरे मनाने के बाद उसने पैसे रख लिए। उसकी आँखों में मैंने एक नया भारत देखा था... साधनों की तंगी के बावज़ूद आगे बढ़ने की उत्कट अभिलाषा।

ट्रेन ने सीटी दी और गतिमान हो गयी। दूर खड़ा एक पागल ट्रेन पर पत्थर फेंके जा रहा था पर ट्रेन तो जैसे उसे मुंह चिढ़ाती, सरसराती, बलखाती, तेज़ी से काफी दूर तलक निकल आई थी। रुके हुए, ठिठके पड़े हिंदुस्तान ने शायद अब रफ़्तार पकड़ ली थी। मैंने खिड़की से झांककर देखा तो खेतों में फैली हरियाली के दर्शन हुए। अभी-अभी अंतःकरण की सरज़मीं पर बारिश हुई थी- बारिश खुशियों की!

लेखक जीवन मैग के प्रमुख संपादक हैं।
सम्प्रति आप जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में विज्ञान संकाय से कक्षा बारहवीं के छात्र हैं तथा मोतिहारी, बिहार से ताल्लुक रखते हैं।
www.facebook.com/akashmanofsky

दाह-संस्कार

-अक्षय आकाश

सुबह-सुबह जब मैं निद्राधीन था तब मेरी बहन के एक वाक्य ने मुझे निद्रा विहीन कर दिया– “बड़े काका अब नहीं रहे !”....

इतना सुनते ही मैं परिवार के अन्य सदस्यों के पास गया जो यह विचार कर रहे थे की आगे क्या करना है. एक घंटे में हम सभी गाँव के लिए रवाना हो गए. आदतन मेरे कान में इयरफोन पड़ा था. मैंने गाड़ी की खिड़की से अपना सिर बाहर निकाला. उसी क्षण मेरी आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित होने

लगी. कारण स्पष्ट न था. क्या यह काका के जाने का दुःख था? या पिछले दिनों मेरे जीवन में आया तूफ़ान ? या फिर इयरफोन से सुनाई दे रहा दुःख भरा गीत ? हो सकता है बाहर से आने वाली हवा के थपेड़ों की वजह से ही मेरी आँखों में पानी आया हो. अब गाँव में दस दिन और बिताने की मजबूरी थी जिसकी वजह से मैं कॉलेज सही वक़्त पर नहीं पहुँच पाता. गाँव में पांव देते ही हमारा स्वागत स्त्रियों के क्रंदन से हुआ जो काका के पार्थिव शरीर को घेरे हुए थीं. मेरी समझ में नहीं आ रहा था- कहाँ जाऊं ? घर में हरेक आँख नम थी. कुछ समय पश्चात गाँव के बड़े-बुज़ुर्ग विधिपूर्वक दाह-संस्कार करने की तैयारी में लग गए. उनकी अर्थी को कंधा देने का समय आया. पीछे मैं और मेरे भैया (काका के छोटे पुत्र) और आगे मेरे पिता और चाचा थे. वे शायद जीवन में कभी एक दूसरे के साथ न रहे हों. ऊपर से काका यह देख कर स्वयं को खुशनसीब समझ रहे होंगे कि उनके दोनों अनुज जिनमें दीर्घकाल से मनमुटाव चल रहा था आज साथ खड़े थे. शायद इसी कामना से काका ने ऐसे समय पर देह का त्याग किया हो. क्या यह मेरे पिता एवं चाचा के दीर्घकालिक मनमुटाव का दाह-संस्कार था ?

कमला नदी (इसे कमलेश्वरी के नाम से भी जाना जाता है) के घाट पर काका का अंतिम संस्कार होना था. वहां पहुँचकर उनके शव को स्नान करवाकर, नई धोती धारण करवाई गयी. तत्पश्चात, उनके शरीर को चिता पर रख कर उसपर घी और तेल का लेप किया गया जिसका कारण मेरी समझ में नहीं आया- क्योंकि घी वो खाते नहीं थे और तेल वो लगाते नहीं थे. तभी ख़याल आया कि यह सब तो अग्निदेव को समर्पित करने के लिए हो रहा है। ख़ैर, उनकी चिता को उनके ज्येष्ठ पुत्र ने अग्नि दी जिनकी चार दिन पहले शादी हुई थी और एक दिन पहले चतुर्थी. और तीन दिनों के बाद दुल्हन का गौना था. प्रकृति का ऐसा विरोधाभास मैंने अपने जीवन काल में पहली बार देखा था. क्या ये उस पुत्र की इच्छाओं का दाह संस्कार था या उसकी दुल्हन की चाहतों का, जो अपने गौने पर पति के साथ ससुर का आशीर्वाद लेने को व्याकुल थी?

शवदाह के पश्चात सभी 33 लोग जो वहां उपस्थित थे नदी में स्नान करने गए. नदी में प्रवेश करते समय सभी के पैर मिट्टी से सन गए. मुझे लगा यह मिट्टी हमारे दुर्गुणों का प्रतीक है जो नदी में डुबकी लगाने के बाद धुल जायेंगे. परन्तु नदी से बाहर आते ही हमारे पैर पहले से अधिक मिट्टी में सन गए थे. लोग दूसरे रास्ते से एक कतार में "राम नाम सत्य... हरी ॐ..." कहते हुए घर पहुँचे जहाँ आँगन में लौह, जल, अग्नि और पत्थर के स्पर्श के पश्चात ही "कुछ और" किया गया. मैंने एक बुज़ुर्ग से पूछा- "ऐसा क्यों ?" जवाब मिला- "पंचतत्व का स्पर्श." पांचवा तत्व – वायु. पर मेरी समझ में नहीं आया कि पंचतत्व में लौह और पत्थर कब से सम्मिलित हो गए ?

मैंने पंडित जी से आगे का क्रम पूछा तो उत्तर मिला, "तीन दिनों तक घर में चूल्हा नहीं जलेगा, घर में पूजा नहीं होगी, दसवें दिन सभी पुरुष केश और दाढ़ी-मूंछ का मुंडन करवाएंगे आदि आदि...". तत्काल, इन सब का कारण पूछने की मेरी हिम्मत नहीं

हुई. मैं सोचता ही रह गया कि क्या मेरे काका की आत्मा को अपने परिवार को आधा भूखा देखकर शांति मिलेगी ? हमें उदास देख कर क्या वह खुश होंगे ? सवाल तो अनेक थे परन्तु पूछने की हिम्मत नहीं थी.

उपस्थित लोगों को इसका तनिक भी आभास न था की परिस्थितियां विवाह से श्राद्ध में परिवर्तित हो जाएँगी. यह अनुभव दर्शाता है की जीवन में किसी भी क्षण कुछ भी हो सकता है. फिर यह सब आडंबर किस हेतु ? मृत्यु अपने स्वयंवर में खूबसूरत से खूबसूरत नौजवान को भी नहीं छोडती. इसपर किसी का वश नहीं है क्योंकि यहाँ न कोई सावित्री है न कोई रावण. अगले ही क्षण ख्याल आया- जब तक जिंदा हैं जी लेते हैं, मौत को मरणोपरांत ही देखेंगे. आगे क्या होगा ? यही सोचते हुए दिन बीत गया. क्या पिताजी और चाचा के मनमुटाव का दाहसंस्कार होगा ? या हमारे दुर्गुणों का ? क्या होगा उस पुत्र का जिसकी अभी अभी शादी हुई है ? कैसी होगी घरवालों की ज़िन्दगी ? तभी आनंद फिल्म का एक डायलोग याद आया, "ज़िन्दगी लम्बी नहीं बड़ी होनी चाहिए." और मैं अश्रुयुक्त मुस्कान सहित पुनः निद्राधीन हो गया...

लेखक जीवन मैग की संपादन समिति के सदस्य हैं. आप दिल्ली विश्वविद्यालय के क्लस्टर इनोवेशन सेन्टर में बीटेक मानविकी के छात्र हैं. www.facebook.com/akshay.akash.56

Uncle Tichkoo

Uncle Tichkoo is a wise old man but lately with age, he appears to suffer from Amnesia. He has lost the grasping power but is never short of wise advice at the right time. He is clever and sometimes it appears that he is faking his amnesia. Tichkoo comprises of 2 words (Tich=slightly and Koo=cool). This character is a creation of ***Divya Suri*** who is a student of class 5th of Queen's Valley School. From now on; Jeevan Mag will publish cartoon strips of Uncle Tichkoo in every issue. © Divya Suri www.tichkoo.com
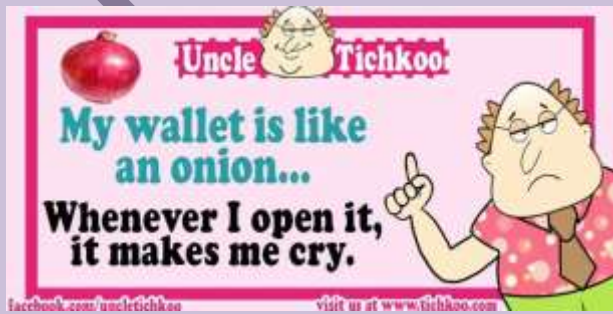
विजेता बोलते हैं कि- **"मुझे कुछ करना चाहिए".** हारने **वाले बोलते हैं** कि- **"कुछ होना चाहिए".**

डायरीनामा

दिल बनारसिया

-अमिनेष आर्यन

अस्सी घाट की सीढ़ियों पर जब बनारस की शाम ढलती है तो हरेक कदम अपनी ज़िंदगी की उलझनों को समेटे गंगा की ओर बढ़ता है- इस उम्मीद में कि शायद गंगा उन्हें अपनी लहरों पर बिठाकर मायावी दुनिया की छलावा-लबरेज़ जिंदगी से किसी सुकून और शांति के सुन्दर महासागर में ले चले जहाँ ना ये भागदौड़ हो ना ही हों वे अनसुलझे सवाल जिनके जवाब हम दिन रात बेचैनी से ढूंढते फिरते हैं.

शाम किस ओर ढली पता भी ना चला. चारों तरफ लालिमा छाई है, मानो आसमां ने श्रृँगार किया हो. गंगा की लहरों में बलखाती दीपों की कतार और रोशनी की परछाइयों में झिलमिलाती गंगा अप्रतिम सुंदर लग रही है. बिल्कुल किसी ज़िम्मेदार जिंदगी की तरह बही जा रही है वह. आखिर हो भी तो क्यों नहीं, सारे मानव जाति को पापमुक्त करने का बीड़ा जो उठा रखा है. दूर खामोश अँधेरे में, गंगा के उस पार एक झिलमिलाती रोशनी काशी नरेश की ऐतिहासिक भव्यता का दीदार करा रही है, रामनगर किले कि अटारियों से झाँकती यह प्रकाशावली इस बात का संकेत थी कि बनारस परिपूर्ण है- इतिहास, सभ्यता, संस्कृति, धार्मिक संस्कारों एवं पवित्रता से और उस उमंग और नए जोश से भी जो सीढ़ियों पर गिटार की धड़कती तार पर थिरकती गुनगुनाती युवाओं की टोली में नजर आ रहा था...

Give me some sunshine Give me some rain Give me another chance I wanna grow up once again. पता तक नहीं चला कि दिल को कब बनारस से मुहब्बत हुई और गंगा की लहरें कब एक दिव्य और अलौकिक आँचल से तन्हा शाम की सुरीली छांव बन गयी, बस निगाहें उस शाम उस हसीन सपने के आगोश में जागती रही- जहाँ सिर्फ सुकून था और अनहद आनंद भी. दिनभर के काम से थके नर नारी किसी अलौकिक सुकून और शांति की खोज में गंगा आरती की धुन पर अपना तन-मन रमाए बैठे हैं. उन सीढ़ियों पर जहाँ अँधेरा पसरा था प्यार के राही बैठे थे तो कहीं कोई तन्हा दिल गंगा कि धारा में पैर लटकाए बैठा था. दूर नदी में रुक-रुक कर एक लहर सी उठती है और अपने साथ लाती है वह प्रतिध्वनियाँ जो दिव्य आभास कराती है- कभी कबीर के खंजरी की ताल गूंजती मर्मस्पर्शी दोहावली की तो कभी गंगा जमुनी तहजीब का पैगाम लिए बिस्मिल्लाह खान की मधुर शहनाई की. जैसे गीता की छाँव में कुरान की आयतें, मैं खामोश बैठा सुनता रहा और कभी-कभी पास के पान की दुकान पर रेडियो से बज रहा गीत- खइके पान बनारसवाला...लेकिन गंगा के शांत प्रवाह में एक आह भरी कसक सी है...लाखों संतान हो जिसके, ना जाने क्यों वह माँ असहाय निर्बल सी कराह रही है...

लेखक ने इसी वर्ष 12वीं उत्तीर्ण की है. बीते दिनों आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की दाखिला प्रक्रिया के सन्दर्भ में बनारस आते जाते रहे हैं. यह रिपोर्ताज आपने वहां से अपनी पहली यात्रा से लौटकर लिखा है. www.facebook.com/aminesh.aryan

किसी डिग्री का ना होने दरअसल फायेदेमंद है. अगर आप इंजिनियर या डाक्टर हैं तब आप एक ही काम कर सकते हैं. पर यदि आपके पास कोई डिग्री नहीं है, तो आप कुछ भी कर सकते हैं.

पाठक मत

प्रधानमंत्री की विदेश यात्रा अप्रभावी

खास पत्र

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शपथग्रहण समारोह में सार्क राष्ट्राध्यक्षों को आमंत्रित कर अपनी विदेश नीति का शानदार आगाज किया था, लेकिन दो महीने बाद वह जोश फीका पडता नजर आ रहा है. उनका हालिया ब्राजील दौरा मिलाजुला रहा. यह भारत के लिए अंतर्राष्ट्रीय मंच पर कूटनीतिक धाक जमाने का पहला मौका था. ब्राजील जाते वक्त वे बर्लिन में जर्मनी के चांसलर एंजेला मर्केल के साथ डिनर करने उतर गये, लेकिन मर्केल उस समय ब्राजील में फीफा विश्वकप का फाइनल मैच देख रही थीं, जिससे भारत को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर थोड़ी-बहुत शर्मिंदगी तो झेलनी ही पड़ी है, दूसरी ओर प्रधानमंत्री के इस कदम से जापान के नाराज होने का डर है, जिससे उन्होंने सबसे पहले द्विपक्षीय समझौते करने का वादा किया है. वहीं फोर्टलेजा में मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिन पिंग की मुलाकात के बाद मोदी-पुतिन बैठक होनी थी. प्रधानमंत्री दो घंटे तक पुतिन की प्रतीक्षा करते रहे, लेकिन वे नहीं आये. फिर उनकी मुलाकात अगले दिन संभव हो सकी. इस तरह रूस ने दबी जुबान भारत को कुछ संदेश दिया है. गौरतलब है कि बीते दिनों रूस के साथ पाकिस्तान के संबंधों में निकटता आयी है. रूस ने पाकिस्तान के हाथों हथियार बेचने का अपना प्रतिबंध वापस ले लिया है. उधर चीन ब्रिक्स बैंक का मुख्यालय अपने यहां ले जाने में कामयाब रहा है, हालांकि इसका पहला सीइओ भारतीय होगा, जो हमारे लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि तो है, पर पहले की अपेक्षाकृत कम. प्रधानमंत्री की यह महत्वपूर्ण यात्रा मिलेजुले परिणामों वाली रही. हां, उनलोगों को निराशा जरूर हुई है, जो मोदी को मनमोहन सिंह की तुलना में अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अधिक प्रभावी देखने को इच्छुक थे.

नंदलाल, दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रभात ख़बर पटना संस्करण में प्रकाशित
नंदलाल मिश्रा का आलेख

बेटा- बाबू जी, अब हमनी के त ग्रेजुएशन हो गईल...

सोचत बा मास्टर्स फोरेन युनिवेर्सिटी से कर लें....

लालू- ई त बड निक आईडिया बा हो.....

चल तोहार एड्मिसन ऑक्सफ़ोर्ड में करवा दूँ....

बेटा- ना बाबू , वहां ते डिक्सनरी पढैत पढैत क त हमर जान निकल जेतय ....

विख्यात बड़बड़िया

www.facebook.com/vikhyat.kumar.77

आप कैसे पहचानेंगे कि आप देश के किस हिस्से में हैं.....?

1) दो आदमी लड़ रहे हैं, एक आदमी आता है,उन्हें देखता है और चला जाता है... ये 'MUMBAI' है.
2) दो आदमी लड़ रहे हैं, एक आदमी आता है, उन्हें समझाने की कोशिश करता है, फलस्वरुप दोनो लड़ना छोड़ कर समझाने वाले को मारने लग जाते हैं... ये 'DELHI' है.
3) दो आदमी लड़ रहे हैं, एक आदमी अपने घर से आवाज़ देता है, "मेरे घर के आगे मत लड़ो, कहीं और जाओ".... ये 'BANGALORE' है.
4) दो आदमी लड़ रहे हैं, पूरी भीड़ देखने के लिये इकट्ठी हो जाये, और एक आदमी चाय की दुकान लगा दे...तो ये 'GUJARAT' है.
5) दो आदमी लड़ रहे हैं, दोनो मोबाईल से कॉल कर दोस्तो को बुलाते हैं, थोड़ी देर में 50 आदमी लड़ रहे हैं. ..ये 'HARYANA ' है.
6) दो आदमी लड़ रहे हैं, एक आदमी ढेर सारी बीयर ले आता है, तीनो एक साथ बीयर पीते हुए एक-दूसरे को गाली देते हैं.. ये ज़रूर 'GOA' है.
7) दो आदमी लड़ रहे हैं, दो आदमी और आते हैं, वो आपस में बहस करने लगते हैं कि कौन सही है कौन गलत, देखते देखते भीड़ जमा हो जाती है, पूरी भीड़ बहस करती है, लड़ने वाले दोनो खिसक लेते हैं. ये 'KOLKATA' है.
8) दो आदमी लड़ रहे है, एक आदमी आता है, गन निकालता है और ढिचकांव. और सब शांत हो जाता है. यानि कि आप UP पहुँच गए.
9) अगला नंबर है BIHAR , अजी ज़रा अपनी कल्पना शक्ति का इस्तेमाल करना भी सीखिए! :P

संकलन- आलोक कुमार वर्मा www.facebook.com/alokkumar.verma.330

हमारी बिजनेस से संबंधित समस्याएं नहीं होतीं, हमारी लोगों से संबंधित समस्याएं होती हैं.

Umair Altaf, Kulgam (Jammu &Kashmir)

Karan Negi
Shimla

Abha Ojha, Jaipur

Akash Kumar

Photo by- Altaf Mallik
Jamia Nagar, Delhi

Photos Of The Month

Akash Kumar, Motihari

Chaitanyaa Sharma, Jaipur

अगर हम हल का हिस्सा नहीं हैं, तो हम समस्या हैं.

मुशायरा

जुदाई

आज मैं जो कुछ भी हूँ अपनी तक़दीर के सहारे,

और जी रहा हूँ ज़िन्दगी उसकी तस्वीर के सहारे।

अब लगता ही नहीं दिल कहीं इस उजड़े चमन में,

चुरा लिया है दिल उसने किसी मुख़बिर के सहारे।

कोशिश कर रहा हूँ दिल बहलाने की इस उजड़े चमन में,

उसके हाथों से लिखे ख़त की तहरीर के सहारे।

लोग इश्क करके जीते हैं ज़िन्दगी मुफ़लिसी में,

क्या वो नहीं जी सकती ज़िन्दगी इस फ़क़ीर के सहारे।

अब मौत भी आती नहीं मांगने पर ख़ुदा से,

बाँधा हुआ है उसने रूह को किसी ज़ंजीर के सहारे।

शबाब अंजुम जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली में ग्यारहवीं विज्ञान के छात्र हैं। आप किशनगंज, बिहार से ताल्लुक रखते हैं। www.facebook.com/shawab.anjum

---

आह तहरीर हुई जाती है
शब की तामीर हुई जाती है

चुप हुए जाते हैं सारे मंज़र
कोई तस्वीर हुई जाती है

सुब्ह होने से भी होता क्या है
रात तक़दीर हुई जाती है

हर घड़ी तीर चलाते हैं ख्याल
याद शमशीर हुई जाती है

बात गुलरेज़ हम जो कह न सके
अब वो गम्भीर हुई जाती है

गुलरेज़ शहज़ाद विचारोत्तेजक शायरी की परंपरा के युवा संवाहक हैं. आप एक बेहतरीन रंगकर्मी तथा जीवन मैग के सलाहकार भी हैं.

ग़ज़ल

अपनी खुदाई का एहसास हो चला मुझको,
मुझे देख आँखों ने उसके वज़ू कर लिया||

उसके इन्साफ के हम तो कायल हैं राघव,
मुझको गुलशन दिया,तो रंगों-बू ले लिया||

इक परिंदा था दिल, पर फडफडाता हुआ सा,
उसकी आँखों ने क्यूँ सब आरज़ू कह दिया||

उसने बचने की कोशिश लाखो की लेकिन,
इक नज़र ने अखारिश उसको छू ही लिया||

राघवेन्द्र त्रिपाठी राघव जीवन मैग की संपादन समिति के सदस्य हैं। आप दिल्ली विश्वविद्यालय के संकुल नवप्रवर्तन केन्द्र में बी.टेक नवप्रवर्तन के छात्र हैं।

आज अपने एक महत्वपूर्ण सफ़र (बताना ज़रूरी नहीं है) के सिलसिले में ट्रेन की यात्रा का आनंद उठाता जा रहा हूँ..... यात्रा के दौरान एक से एक रोचक कारनामों के दीदार हो रहे हैं..... (हँसते-हँसते पेट ढीला हो गया है)

देखिए ना अभी अभी एक ठंडा (नाम का ठंडा) बेचने वाला 'कोका-कोला' को 'कंपा-कोला' कहते हुए गुज़रा तो पीछे से 'मूँगफली' को 'मोमफ़ली' कहता हुआ दूसरा आ धमका...नारियल और रामदाना वालों की तो पूछो ही मत... (उनकी महिमा राम ही जाने)..... अपनी अज़ीबो ग़रीब आवाज़ में एक से एक चीज़ें बेचते हुए मेरे बर्थ के सामने से गुज़र रहे हैं....

इसी दरम्यान एक बादाम वाला राग भैरवी में 'बादाम बोलो... बादाम बोलो...' अनवरत चिल्लाए जा रहा था... मैं गुस्से में 'बादाम...बादाम...' बोलने लगा.... मगर वो अपनी ही धुन में गुनगुनाता अगले डिब्बे की ओर बढ़ गया.... (वैसे भी बादाम का दाम केजरीवाल की टोपी की कीमत से कम नहीं था...)....!

विख्यात बड़बड़िया (लेखक सनबीम स्कूल, वरुणा, बनारस में 11वीं कक्षा के छात्र हैं.)

www.JeevanMag.com

लोगों से साथ विनम्र होना सीखें. महत्वपूर्ण होना जरुरी है लेकिन अच्छा होना ज्यादा महत्वपूर्ण है.

The foolish thing, love

What a foolish thing love is!
Not divine but a dream,
which never comes true

It snatches up our heart & mind
And gives an everlasting pain,
Throughout the life span.

One who gets this,
It takes him to wrong & wrong;
Upto there from where
He can never come.

It snatches up
Whatever one has;
And leaves him to
Bewilder alone.

Alok Chandra is a student of Class XII Science of Shantiniketan Jubilee School, Motihari & has an association with Jeevan Mag from a long period of time.

The Road Not Taken

Two roads diverged in a yellow wood,

And sorry I could not travel both

And be one traveler, long I stood

And looked down one as far as I could

To where it bent in the undergrowth;

Then took the other, as just as fair,

And having perhaps the better claim,

Because it was grassy and wanted wear;

Though as for that the passing there

Had worn them really about the same,

And both that morning equally lay

In leaves no step had trodden black.

Oh, I kept the first for another day!

Yet knowing how way leads on to way,

I doubted if I should ever come back.

I shall be telling this with a sigh

Somewhere ages and ages hence:

Two roads diverged in a wood, and I—

I took the one less traveled by,

And that has made all the difference.

Robert Frost

हे भागीरथी बोलो तो!

हे भागीरथी बोलो तो!
क्यों हो मौन शांत कुछ तो उत्तर दो?
हे भागीरथी बोलो तो!
करने तुम जिनका उद्धार
आई छोड़ स्वर्ग द्वार
वे कर रहे नित - नित
तेरा दूषण - प्रतिकार
क्यों लौट न जाती छोड़
धरा स्वर्ग को?
हे भागीरथी बोलो तो!
कर तनिक कलयुग ध्यान
रहा न मातृ पितृ सेवा ज्ञान
आशा तेरी बेकार निराधार है
पुत्र तेरे दुखों से अनजान
क्या 'माता हो न कुमाता' के
मृदुल वैभव की रखवाली हो?
हे भागीरथी बोलो तो!
या तोड़ दो बांध सारे
डुबो दो भूतल किनारे
या भर दो मानव-उर में
प्रेम बीज प्यारे प्यारे
क्या हुई तुम भी
वृद्ध-क्षीण-अशुच हो?
हे भागीरथी बोलो तो!
क्यों हो मौन शांत
कुछ तो उत्तर दो?
हे भागीरथी बोलो तो!

नंदलाल मिश्रा
प्रबंध संपादक

कभी भी दुष्ट लोगों की सक्रियता समाज को **बर्बाद** नहीं करती, बल्कि हमेशा अच्छे लोगों की निष्क्रियता समाज को **बर्बाद** करती है.

एफवाईयूपीः एक नवोन्मेषी शिक्षा प्रणाली की हत्या

-नंदलाल मिश्रा

दिल्ली विश्वविद्यालय और यूजीसी में लम्बी खींचतान के बाद डीयू के कुलपति ने चारवर्षीय पाठ्यक्रम को लौटा कर पुनः त्रिवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम लागू करने का फैसला किया है. इस प्रकरण ने कोई सवाल सुलझाया नहीं है, बल्कि कई नए सवाल खड़े किए हैं। इसने उच्च शिक्षा के तंत्र में मौजूद गंभीर गड़बड़ियों को भी उजागर किया है। अगर देश के एक बड़े और प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय के साथ ऐसा हो सकता है, तो छोटे और देश के कोने-कोने में स्थित विश्वविद्यालयों का हाल जाना जा सकता है। कुछ लोगों ने अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति, सुविधापरस्ती और स्वयं-स्वार्थ सिद्धि के लिए शिक्षा व्यवस्था में इतनी जल्दी उलटफेर की. शिक्षा में इस कदर राजनीतिक दखल दुर्भाग्यपूर्ण है. वैसे तो सरकार यह कहती रही कि वह यूजीसी और डीयू के इस मामले में दखल नहीं देगी. किंतु यह पूरी तरह स्पष्ट है कि केंद्र में सत्ता परिवर्तन के बाद सरकार के दबाव में ही यूजीसी ऐसा कर रही थी. यदि ऐसा नहीं है तो फिर डेढ़ साल तक वह चुप क्यों रही.

गौरतलब है की पिछले साल 23 जुलाई को यूजीसी ने दिल्ली विश्वविद्यालय को एक चिट्ठी लिखकर इस कोर्स को शुरू करने की सहमति दी थी. यह एक न्यायालीय शपथ पत्र था जिसमें यह स्वीकार किया गया था कि चारवर्षीय पाठ्यक्रम किसी प्रकार से शिक्षा नीति के विरुद्ध नहीं है. इतना ही नहीं यूजीसी ने डीयू में नए पाठ्यक्रम को लागू करने में मदद हेतु सीएसआईआर के महानिदेशक एस के जोशी के नेतृत्व में 5 सदस्यों की एक सलाहकार समिति गठित की थी. इस समिति ने 25 फरवरी 2014 को अपनी रिपोर्ट दी जिसमें कहा गया कि नया पाठ्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अनुपालन नहीं करती है. और तब इस रिपोर्ट के आधार पर यूजीसी 20 जून से इसे वापस लेने हेतु लगातार डीयू पर दबाव बनाये रखती है. क्या यूजीसी रिपोर्ट के तुरंत बाद ऐसा नहीं कर सकती थी जिससे नामांकन प्रक्रिया में भी दिक्कतें नहीं आतीं. क्या एस के जोशी कमिटी सचमुच मदद के लिए बनी थी या जांच के लिए? उसे अपनी रिपोर्ट देने में इतना लम्बा वक्त क्यों लगा?

जाहिर है या तो यूजीसी तब यूपीए सरकार के दबाव में फैसला कर रही थी या वह अब एनडीए सरकार के इशारे पर ऐसा कर रही है जिसने अपने दिल्ली घोषणा पत्र में इसका वादा किया था. सवाल तो यूजीसी की स्वायत्तता का है. क्या यूजीसी अपने विवेक के बजाय सरकार के इशारे पर कठपुतली की तरह नाचती रहेगी? यह देश की शिक्षा संस्थानों और विद्वानों की समितियों के लिए शर्मनाक है. जैसे सीबीआई निदेशक रंजीत सिंह ने ये कहते हुए सरकार को सावधान कर दिया था की केन्द्रीय जांच ब्यूरो पिंजरे में बंद तोता नहीं है वैसे ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को सरकारी दबाव और नीच राजनीति से ऊपर उठ कर काम करना चाहिए. डीयू कुलपति दिनेश सिंह की बजाय यूजीसी अध्यक्ष वेद प्रकाश को इस्तीफा दे देना चाहिए था क्योंकि वे अपनी संस्था की स्वायत्तता की रक्षा करने और विवेकपूर्ण फैसले लेने में नाकाम रहे हैं. ये वहीं वेद प्रकाश हैं जो एफ.वाई.यू.पी लाने के समय में

भी यूजीसी के अध्यक्ष थे. इन श्रीमान ने ही फरवरी में दिल्ली विश्वविद्यालय के वार्षिक उत्सव अन्तरध्वनि के उद्घाटन समारोह में बोलते हुए दस मिनट तक चारवर्षीय पाठ्यक्रम और पाँच मिनट तक दिनेश सिंह की तारीफ की थी. यह सब ड्रामा नहीं तो क्या है या फिर था??

एक सत्य यह भी है कि एफवाईयूपी की खिलाफत करने वाले अधिकांश लोग ना तो इस पाठ्यक्रम का हिस्सा थे न ही वे इसकी पूरी संरचना और पाठ्यक्रम से परिचित थे. विरोध करने वाले मुख्यतः राजनीतिक पृष्ठभूमि से थे. दिल्ली विश्वविद्यालय प्रशासन ने बीते कुछ सालों से राजनीतिक छात्र संघों पर अंकुश लगाने की कोशिश की है. इससे उन छात्र संघों में असंतोष है जो इस विरोध में सामने आ रहा है. दूसरी ओर डीयू प्रशासन ने शिक्षकों के मनमानी पर भी रोक लगायी है. अब उन्हें नियमित क्लास लेना होता है. समय से आना और जाना होता है. अब उन्हें बच्चों के साथ मिलकर कठिन मेहनत करनी पड़ती है जो उनकी चाहत और आदत के विपरीत हैं. ऐसी भी बात चल रही है कि अब शिक्षकों को कालेज आते और जाते समय अंगूठे का निशान लगाना होगा. फलस्वरूप शिक्षकों में घोर असंतोष है और वे एफ.वाय.यू.पी के बहाने कुलपति का विरोध कर रहे हैं. एफ.वाय.यू.पी के तहत प्रथम वर्ष के छात्र अपने भविष्य को लेकर काफी चिंतित हैं. इनमें से अधिक छात्र छुट्टियों में घर गए हुए हैं. फलस्वरूप उनकी संगठित आवाज मीडिया में नहीं आ पायी. दूसरी और बीटेक के छात्र काफी परेशान थे. लेकिन यूजीसी ने उन्हें बड़ी राहत देते हुए इस कोर्स को समान पाठ्यक्रम के साथ चार साल का रहने दिया है. लेकिन यह सिर्फ 2013-14 बैच के छात्रों के लिए होगा अर्थात इस सत्र से बीटेक पाठ्यक्रम में नामांकन नहीं होंगे. यह एक तरह से प्रयोग ही होगा. देखना है इस बैच के छात्र क्या गुल खिलते हैं. यदि ये छात्र पढ़ाई के साथ प्लेसमेंट में आईआईटी के समांतर महत्वपूर्ण सफलता अर्जित करते हैं तो चार वर्षीय पाठ्यक्रम पुनः विचारणीय बन जाएगा. मसलन इस बैच का परिणाम एफ.वाय.यू.पी की सार्थकता सिद्ध कर सकता है. ध्यान रहे की इनके साथ कोई निकृष्ट राजनीति ना होने पाए.

अब बात चारवर्षीय पाठ्यक्रम की. एफवाईयूपी महात्मा गाँधी के प्रयोगात्मक शिक्षा नीति और हाथों के प्रयोग पर आधारित थी. हमारी पारंपरिक शिक्षा पद्धति केवल सैद्धांतिक रूप से समृद्ध रही है. फलस्वरूप भारत हमेशा से शोध एवं अनुसंधान में पिछड़ा रहा है. लेकिन इस नये पाठ्यक्रम में सिद्धांत के साथ परियोजना कार्य, फील्ड वर्क, प्रयोग एवं शोध को समान महत्त्व दिया गया था ताकि विद्यार्थियों को कार्य कुशल बनाया जाए. चार साल के दौरान उन्हें इंटर्नशिप के साथ साथ शोध का भी मौका मिलता. इससे हिंदुस्तान में सामूहिक कार्यों एवं शोध-प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता. एफवाईयूपी को बाज़ार की जरूरत के अनुसार तैयार किया गया था ताकि पढ़ाई समाप्त होते ही छात्रों को नौकरी मिल सके. संभव था इस पाठ्यक्रम का दूरगामी सकारात्मक प्रभाव होता. याद होगा राजीव गाँधी ने जब सूचना क्रांति का आह्वान किया था तो उनका भी भयंकर विरोध हुआ था.

एफवाईयूपी के तहत छात्रों को एक विषय में 20 पेपर के साथ विशेषज्ञता प्रदान की जाती. इसी विषय में उन्हें चार व्यवहारिक कोर्स के पेपर पढ़ने होते जिससे वे उस विषय से संबंधित कार्यों के लिए दक्ष और प्रशिक्षित हो सकें. साथ ही छात्रों को अपनी पसंद के दूसरे विषय में 6 पेपर पढ़ने होते. वे आगे इसमें मास्टर्स भी कर सकते थे. इसके अतिरिक्त 11 फाउंडेशन कोर्स हैं जो छात्रों को विभिन्न विषयों की आधारभूत जानकारी देते हैं. विरोधी इन कोर्सो का जम कर विरोध कर रहे हैं. लेकिन मेरा मानना है कि आज की दुनिया मल्टीटास्किंग है अतः विद्यार्थियों को सभी विषयों का ज्ञान होना आवश्यक है. इन कोर्सो का मुख्य उद्देश्य था छात्रों में हरफनमौला व्यक्तित्व के साथ उनमें नैतिकता और रचनात्मकता का विकास करना. और किसी छात्र में सृजनात्मकता विकसित करना और नैतिकता के पतन को बचाना ही शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण ध्येय है. विरोधियों का कहना था कि ये सब 12वीं तक पढ़ाया जाना चाहिए. लेकिन सच पूछिए तो ये चीज़ें जीवन भर पढ़ी पढ़ाई जाये तो भी कम ही होगी.

विरोधी मानते हैं कि इस नए पाठ्यक्रम में एक साल बेकार में बर्बाद किया जा रहा था. लेकिन पाठ्यक्रम में इन मौलिक परिवर्तनों के निवेश के लिए तो एक साल बढ़ाना ही पड़ता अन्यथा पूरा पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के लिए बोझ बन जाता. दूसरी बात, यह सही है कि तीन की बजाय चार साल के पाठ्यक्रम में छात्रों का खर्च बढ़ जाता. ख़ासकर जो दिल्ली से बाहर के और आर्थिक रूप से

पिछड़े छात्र हैं उनकी मुश्किलें बढ़ जातीं. लेकिन यह भी तो मानना चाहिए कि इस चार साल के पाठ्यक्रम के बाद छात्रों को आसानी से नौकरी मिल सकती थी. वैसे भी अधिकांश छात्र स्नातक के बाद या तो मास्टर्स करते हैं या फिर किसी शहर में ही ठहर कर सामान्य प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी करते हैं जिसमें अपेक्षाकृत अधिक ही खर्च आता है.

नए पाठ्यक्रम की आत्मा थी शोध. भारत हमेशा से इस क्षेत्र में पिछड़ा रहा है. हमारे देश में माध्यमिक शिक्षा पाने वालों में 20 प्रतिशत से कम ही लोग उच्च शिक्षा में आ पाते हैं. और इसका भी शतांश हिस्सा ही मास्टर्स, एमफिल, पीएचडी और रिसर्च में जाते है. लेकिन इस युगांतकारी शिक्षा प्रणाली में स्नातक के छात्रों को शोध-अध्ययन का मौका मिलता. इससे ना केवल शोध की तरफ आकर्षित होने वालों की तादाद में इजाफा होता अपितु हम भी जापान की तरह तेजी से तरक्की के सपने को साकार कर पाते. संभव था कुछ वर्षों बाद हमारे यहाँ भी नोबेल पुरस्कार आने लगते.

इस बात में भी कोई दोराय नहीं इस नए पाठ्यक्रम को बिना किसी सर्वेक्षण या अध्ययन के आनन-फानन में लागू कर दिया गया. गौरतलब है कि अपने समर्थन में दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति ने योजना आयोग की बारहवीं योजना के दस्तावेजों का सहारा लिया, जिसने सिर्फ एक पैराग्राफ में भारत की स्नातक शिक्षा की कमी को दूर करने के उपाय के रूप में चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम का प्रस्ताव रखा है। लेकिन यह और भी दुखद है कि इस लोकतांत्रिक देश में योजना आयोग जैसी संस्था ने भी इस नतीजे पर पहुंचने के लिए किसी सर्वेक्षण या अध्ययन की जरूरत महसूस नहीं की. नए पाठ्यक्रम के विरोधियों के इस तर्क में भी कम दम नहीं कि दिल्ली विश्वविद्यालय की विद्वत परिषद कुलपति के कृपापात्रों से भरी पड़ी है या उनके दबाव में काम करती है. लेकिन इस बदलाव से कुलपति का कोई निजी स्वार्थ जुड़ा हो ऐसा भी तो नहीं कहा जा सकता. हाँ ऐसा हो सकता है कि उनके मन में एक नव युगप्रवर्तक कहलाने की महत्वाकांक्षा पल रही हो जिसकी सीधी टक्कर अन्य लोगों की महत्वाकांक्षाओं से हुई हो जो ईर्ष्यावश इस परिवर्तन के मुखालफ़त में कूद पड़े. गाँधी और बुद्ध का यह भारत कब तक कुछ गिने चुने लोगों की राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की टक्कर का दंश झेलता रहेगा. याद रहे कुलपति को इसी साल शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान के लिए पद्मश्री प्रदान किया गया.

यक़ीनन एफवाईयूपी में बहुत कमियां थीं. बावजूद इसके हमारी शिक्षा प्रणाली को सुधारने का यह एक बेहतर विकल्प था जिसमें समय के साथ सुधार किया जाना चाहिए था बरक्स इसे सीधे ख़त्म करने के. कहते हैं- नदी के मध्य में पहुँच कर लौटने से बेहतर है की आगे का सफ़र जारी रखा जाए. कभी न कभी हमारे देश में वक्त की मांग पर यह पाठ्यक्रम प्रणाली पुनः दस्तक देगी और तब हमें कुछ पीछे रह जाने का दुखद एहसास भी जरूर होगा.

नंदलाल मिश्रा

(प्रबंध संपादक)

JeevanMag.com

www.facebook.com/sumit.nandlal

Student, B.Tech in Humanities,
Cluster Innovation Centre,
University of Delhi

अपने मित्रों को सावधानी से **चुनें.** हमारे व्यक्तित्व की झलक न सिर्फ हमारे **संगत** से झलकती है बल्कि, जिन संगतों से हम दूर रहते हैं उससे भी झलकती है.

ज़ैद की कलम से...

अबूज़ैद अंसारी जीवन मैग के सह संपादक हैं। आप जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में बारहवीं कक्षा के छात्र हैं।

आरज़ू

ग़म-ओ-दर्द की दवा की जाए

फिर से एक ग़ज़ल लिखी जाए

आंसुओ में क़लम डुबो कर

हर बात अब बयां की जाए

जिसने मरने की हमको बददुआ दी
उसके हक़ में अब दुआ की जाए

बस मेरी आख़री दुआ है खुदा

मेरी उम्र सारी उसको लग जाए

उसके लब से दुआ ना बददुआ सही

आमीन ! बददुआ क़बूल की जाए

या खुदा ज़िंदगी को अब मुकम्मल कर

मेरी रूह तन से अब जुदा की जाए

मेरे दो चेहरे उसका ऐसा कहना था

मैं बहुत ज़ेर उसका ऐसा कहना था

वो नहीं समझा ग़र समझ जाता

छोड़ो इस बात को क्यों हवा दी जाए?

अजनबी

राहों में चलते चलते
एक अजनबी मिला है
वाक़िफ़ नहीं हूँ उससे
अपना सा क्यूँ लगा है

छोटी सी गुफ़्तगू में
ढेरों सवाल मेरे
मासूम है बहुत वो
जवाबों से लग रहा है

वो याद आता मुझको
मैं जब भी तन्हा होता
ना जाने उससे मेरा
कैसा ये रिश्ता है

हक़ीक़त खुदा है जाने
क्या हाल हैं अब उनके
शायद मेरे ही जैसा
कुछ हाल उनका है

हैरान है बहुत "ज़ैद"
ये क्या से क्या हुआ है
ऐसा नही था पहले
अब जैसा हो गया है

समंदर सी दो आँखें

अब तक जो मेरी सोच से बाहर थी जो आँखें
ख्वाबों में ना सोची थी कभी सागर सी वो आँखें।
टकराई है जबसे ये नज़र, उनमें डूब गया हूँ
वल्लाह! अजब बात, मैं झूठा नहीं हूँ ।।

कुदरत के नज़ारे तो बहोत सारे थे देखे
दरिया भी कभी देखी, समुंदर कभी देखे।
रातों में सितारे भी नहीं हों ऐसे रोशन
वल्लाह! ऐसी रोशन समुंदर सी दो आँखें।।

उन आँखों से टकराई ही क्यों?
मेरी पत्थर सी ये आँखें।
पाने की चाह दिल में उस शख्श को जागी है
जिस शख्श को हासिल ये समुंदर सी दो आँखें।।

वो दूरी बनाकर मुझे तड़पाता बहोत है
अफ़सोस नहीं मुझको सितम ढाता बहोत है।
दिल की गहराई से करता हूँ शुक्रिया
जब देखतीं हैं मुझको वो समुंदर सी दो आँखें।।

अब तक जो मेरी सोच से बाहर थी जो आँखें
ख्वाबों में ना सोची थी कभी सागर सी वो आँखें।
लिखता नहीं "ज़ैद" यूँ ग़ज़ल सफ़र में
याद आती हैं हरदम उसे वो समुंदर सी दो आँखें।।

अबूज़ैद अंसारी (सह-संपादक)
www.facebook.com/abuzaid786
@abuzaidansaari on Twitter

ज़ैद की कलम से अगले पृष्ठ पर जारी ...

क्या किया ये आपने

आपसे उम्मीद-ए-वफ़ा थी, क्या किया ये आपने

मेरे जज़्बातों पे खंजर चला दिया क्यों आपने

हम तो सजदों में खुदा से बस माँगते थे आपको

बदले में मर जाए हम, ये बददुआ दी आपने

आपने दिल ही ना तोड़ा ख़्वाब तक तोड़े मेरे

अब मरे या ना मरे, बर्बाद तो किया आपने

वो बददुआ के तीन लफ्ज़ भूला नहीं हूँ आज भी

ग़र मर गया तो लोग कहेंगे क्या किया ये आपने

है दुआ आप ख़ुश रहें कोई ग़म से रिश्ता ना रहे

हम तो जीते हैं उस ग़म में जो दिया है आपने

अबूज़ैद अंसारी

www.jeevanmag.com/search/label/Abuzaid Ansari
www.facebook.com/abuzaid786
www.twitter.com/

आशा के दीप

छोटे पंखों के पक्षी भी
दूर व्योम में जा आते हैं
मन में बच्चे भी अपने
स्वप्न बड़े सजाते हैं
फिर हम इस जीवन संघर्ष से
इतना क्यों घबराते हैं?
हटाकर तम निराशा का अब
हम आशा के दीप जलाते हैं

सूर्य की अन्तिम किरणें जब
धरती से दूर हो जाती हैं
ले लेता तम हर ओर बसेरा
दुनिया आलस में सो जाती है
सपने झूठे देख रात भर
फिर प्रातः क्यूँ पछताती है?
हटाकर तम निराशा का अब
हम आशा के दीप जलाते हैं

सैनिक की आँखों में
सीमा पर सपने पलते हैं
उनको भी आशा होती है
कब अपने घर को चलते हैं
हटाकर तम निराशा का अब
वे आशा के दीप जलाते हैं

- अबूज़ैद अंसारी

(फ़ोटो- करण नेगी, शिमला)

देखो बादल बरस रहे हैं

नील गगन हुआ श्यामल श्यामल,
मेघों ने साम्राज्य बसाया।
जल को जन क्यों तरस रहे हैं ?
देखो बादल बरस रहे हैं।

अणु-अणु हुआ शीतल-शीतल
ठंडी मलय व ठंडा सा जल।
अधरों पर मुस्काहट लेकर
नभ को सब जन तक रहे हैं।

देखो बादल बरस रहे हैं।

पौधों-पत्तों में हरियाली
जन-जन में फैली खुशहाली।
धरती के गर्भ से अब अंकुर
फ़ूट-फ़ूट कर उपज रहे हैं।
देखो बादल बरस रहे हैं।

- अबूज़ैद अंसारी

(फ़ोटो- करण नेगी, शिमला)

किसी को धोखा न दें क्यूंकि ये आदत बन जाती है , और फिर आदत से व्यक्तित्व.

आकाश की इलेक्शन डायरी

लोकसभा चुनावों के दौरान सियासी हलचल पर जीवन मैग के प्रमुख संपादक **आकाश कुमार** की बेबाक राय, फेसबुक वॉल से!

04/03 लोकसभा चुनावों का बिगुल बजा, सियासी गलियारों में बढ़ी सरगर्मी- चुनाव 10 अप्रैल से...सिंहासन खाली करो कि जनता आती है!!!

22/03 Senior Journalist MJ Akbar to join BJP... Now, We'll not b able to read an unbiased MJ Akbar... Have lost Aashutosh long b4....R.I.P:-\ a great journalist... Do ur bit to enhance the quality of politics :) Added to the set is Ex-bureaucrat NK Singh who got into BJP leaving JDU...He is also a column writer in prominent newspapers like Hindustan :)

23/03 भाजपा में ये हो क्या रहा है??? लौह-पुरुष आडवानी की अनदेखी, सर्वोत्तम विदेश-मंत्रियों में शुमार जसवंत सिंह का टिकट कटना, प्रमोद मुत्तालिक जैसे महिला-विरोधी की पार्टी में एंट्री... कहीं भाजपा के लिए ये कदम आत्मघाती ना साबित हो जाएँ!!! इन सबके बावजूद भाजपा का कुनबा दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है...कल तक धर्मनिरपेक्षता की कसमें खाने वाले पार्टी के धुर विरोधी भी पार्टी का दामन थाम बहती गंगा में हाथ धोने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे!!! ;-)

ब्रेकिंग न्यूज़!!! हाई-वोल्टेज ड्रामा!!! बीबीसी के हवाले से ख़बर मिली है कि भारतीय जनता पार्टी ने श्रीराम सेना प्रमुख महिला-विरोधी छवि वाले प्रमोद मुत्तालिक को पार्टी से निकाल दिया है!!! बेचारे मुत्तालिक :-(आज ही आये, आज ही निकाले गए... भाजपा में चंद घंटों के मेहमान: P भाजपा के लिए- ज़ल्द आये, दुरुस्त आये: P

28/03 Sabir Ali is the new kid on the BJP block. It's sad that the party which is most probable to form the govt. is getting criminalised. Sabir is named in numerous cases, Gulshan Kumar murder & Smuggling etc. being some of them. His induction has raised many a questions & happily enough the questioner is from inside the party. BJP Vice-Prez Mukhtar Abbas Naqvi has tweeted- "Terrorist Bhatakal friend join BJP...soon accepting dawood." A sigh of relief that internal democracy is still alive in BJP.

02/04 नफ़रत नही है किसी मज़हब से, हर भाषा से प्यार हैं. बुरा लगता हैं हर वो शख़्स, जो देश का गद्दार है। जय हिन्द।। सटीक टिप्पणी....क्या आप इससे इत्तेफ़ाक रखते हैं?

03/04 पहली बार (अतिश्योक्ति हो सकती है :P) शिवसेना ने कुछ creative किया है। 1 अप्रैल के अवसर पर शिवसेना द्वारा लगाये गए पोस्टर्स लाज़वाब थे। उनपे लिखा था- For years the congress have fooled you, this April fool them!!! :P बेशक!!!! ;-)

स्वप्न देखा था कभी जो आज हर धड़कन में है। एक नया भारत बनाने का इरादा मन में है।। हिंदुस्तान को स्वर्ण युग देने वाले दूरदर्शी प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की ये पंक्तियां पिछले चुनाव तक भाजपा के चुनाव प्रचार का अहम हिस्सा हुआ करती थीं। पर लगता है कि 'MODI'fication के इस युग में पार्टी उनको बिसरा चुकी है.

यह तो सरासर धर्म तथा राजनीति का intersection है...संविधान सम्मत नहीं। मुस्लिम वोटों के बिखराव को रोकने के लिए जामा मस्जिद के इमाम बुखारी से मिलीं सोनिया- भाजपा ने कि चुनाव आयोग से की शिकायत। कांग्रेस पर धर्म के नाम पर चुनाव आचार संहिता हनन का आरोप। मुस्लिम धर्मगुरु याहया बुखारी ने कहा- मुस्लिमों को आज तक सबसे ज़्यादा कमजोर कांग्रेस ने किया। जो भी हो... "भारत के मज़बूत हाथ, हम सब है एक साथ"....गीत अच्छा है पर शायद इस बार नहीं चलेगा।:P

07/04 भाजपा का बहुप्रतीक्षित घोषणापत्र जारी... मुस्लिम सरोकार को भी मिली तरज़ीह! घोषणापत्र निःसंदेह काबिले-तारीफ है पर सरकार बनने की स्थिति में इनका वजूद में आना भी ज़रूरी है। जनता से किये गए वादे मुंगेरीलाल के हसीन सपने बनके नहीं रह जाने चाहिए।

21/04 चुनावी मौसम में बेवकूफ़ाना बयानों से बाज़ नहीं आ रहे हैं नेता....अबकी बार अबू आज़मी (Not मोदी सरकार! :P)... ज़नाब ने मुंबई में रह रहे यूपी के प्रवासियों से निवेदन किया है कि वे मुंबई में वोट डालने के बाद यूपी लौट वहां भी सपा के लिए वोट करें!!! ख़ैर, पवार साहब को भी तसल्ली हुई होगी कि इस मामले में भी कोई तो उनके साथ है! :P ;-)

22/04 कुछ चुनावी चुटकुले...सोचिये मत, बस मज़े लीजिये :)

अरविंद केजरीवाल को अब लगता है कि पाँचवी क्लास में चांटा मारने वाले गुप्ता सर भी भाजपा के आदमी थे..!

केजरीवाल को प्रधानमंत्री बनाने का सपना देखने वाले वो हैं जिन्हें लगता है अल्ताफ राजा को संगीत में उनके योगदान के लिए "भारत रत्न" मिलना चाहिए..!

हम मैडम सोनिया जी को मंत्रमुग्ध हो कर सुन रहे थे। लेकिन जब मैडम "नर-मादा योजना" पर आई तो हम हड़बड़ा गए। फिर एक कांग्रेसी ने राजीव शुक्ला को फोन लगा के पूछा तो उन्होंने बताया कि मैडम 'नर्मदा योजना' पर बोल रही हैं। #copied

लोग इसकी परवाह नहीं करते हैं कि आप कितना जानते हैं, वो ये जानना चाहते हैं कि आप कितना ख़याल रखते हैं.

23/04 गिरिराज सिंह के बाद विहिप नेता प्रवीण तोगड़िया का बचकाना बयान। क्या है इस बयान के पीछे का राज़- ज़्यादातर लोगों का मत है कि ये उनके फासीवादी दृष्टिकोण को उजागर करता है पर एक आशंका यह भी है कि कहीं यह मोदी को पीएम पद तक ना पहुँचने देने की उनकी कोशिश का एक हिस्सा तो नहीं? तोगड़िया मोदी-विरोध के लिए जाने जाते रहे हैं, उनकी केशुभाई पटेल से निकटता भी इस बात की ताकीद करती है। बहरहाल, जो भी हो देश और राजनीति के लिए ये बुरा ही है। :-\ मोदी ने ख़ुद को पार्टी का शुभचिंतक कहने का दावा करने वाले लोगों के गैरजिम्मेदाराना बयान पर नाख़ुशी जाहिर की है. (आंसू घड़ियाली भी हों तो चलेंगे: P :-*) मोदी का मानना है कि संकीर्ण बयान के जरिए ये लोग विकास एवं सुशासन के मुद्दे से प्रचार अभियान को भटका रहे हैं। पर भाजपा को चाहिए कि गिरिराज और तोगड़िया (मुश्किल होगा :-\ ) पर पार्टी अनुशासनात्मक कारवाई करने की हिम्मत दिखाए।

26/04 ना जाने देश की राजनीति को क्या हो गया है? :-\ कोई भी पार्टी, चाहे वह भाजपा हो या कांग्रेस अपना विज़न बताने के बजाय एक-दुसरे पर कीचड़ उछाल रही हैं। कभी मोदी की पत्नी तो कभी प्रियंका के पति उफ्फ्फ़ लोग अब इन व्यक्तिगत आक्षेपों से, टॉफ़ीयों से ऊब चुके हैं। मोदी लहर, पता नहीं ये है भी या नहीं, का कारण विरोधी पार्टियों का मोदी-विरोधी प्रचार ही रहा है। जिस चीज़ का जितना विरोध होता है वह उतना ही निखर कर सामने आती है। कांग्रेस को याद रखना चाहिए की 2009 में भाजपा की हार का कारण भाजपा द्वारा किया गया नकारात्मक चुनाव प्रचार था।

प्रियंका उवाच- "मेरे पति और परिवार को अपमानित किया जा रहा है। वो जितना अपमानित करेंगे हम उतना मजबूत होंगे।" अब तो मोदी की मजबूती का राज़ आपकी समझ में आ गया होगा? :P :-*

16/05 Modi Wave confirmed, NDA on its way to make a stable govt. BJP garners majority on its own making it directly reponsible 4 nythng wrong hpng out there....Historical mandate, Unputdownable government & Great responsibility!!! Hoping 4 an all-inclusive, progressive govt. Congo Narendra Modi!!! Chap, u played it tramendously!!! #IndiaDecides2014

BJP sitting MP Radhamohan Singh wins by a large margin of about 1.5 lacs frm my hometown seat...Congo The chief obstruction in the development of Motihari was that we chose an MP from the party other than that in power in center...In vajpayee govt., v had Akhilesh singh of RJD & in UPA govt v had BJP in our city....Looking forward to Radhamohan singh for opening central university soon...

Disappointing...BJP sitting MP & its National spokesperson Syed Shahnawaz Hussain loses Bhagalpur by a small margin of 2204 votes...He could have got a good ministry & was also d best bet 4 Bihar CM...He was obviously harmed by the statements of none other than Giriraj singh....

17/05 BrEaKiNg NeWs---- Nitish Kumar resigns from Bihar CM post...heading Bihar to assembly elections!!!****ये तूने क्या किया**** Emotional Daanw. The resignation came after Ramwilas Paswan's comment. If BJP has to win the assembly elections, it must put up a strong face like Syed Shahnawaz Hussain / Ravishankar Prasad/ Rajiv Pratap Rudi...... Those in State like Sushil Kumar Modi or Ashwini Chaubey are of no work.....RJD & congress would be equally delighted by the resignation but JDU can get sympathy votes to form the govt. again despite of great loss in Parliamentary elections. JDU looking forward to embracing RJD!!! Nitish & Lalu can come on the same floor to beat Modi!!! Masterstroke to weaken Bihar BJP...Tomorrow Nitish ji is gng to get the CM chair again after all this drama but the state can have re-elections soon!!!

19/05 जीतन राम माँझी होंगे बिहार के नये मुख्यमंत्री। नीतीशो को भाया सोनिया का रिमोट कंट्रोल स्टाइल...अभी अभी रिमोट मॉडल फेलिआया है तबो ना बुझाया मरदे....जाइये। भले बटन तीरवा के चुनउआ में लोग नकार दिया, लेकिन इहाँ त नीतीश जी एगो कएगो शिकार करे के ताक में हैं। शरद बाबू के इ तीरवा बड़ा कस के लगा है...बेचारे पस्त पड़ल हैं। नीतीश जी कहीं अइसन त ना कि सीएम होने के नाते मोदी जी से हाथ मिलावे के पड़ता एही लाजे एतना बड़ त्याग किए हैं।

26/05 NaMo swears in as PM. Motihari MP Radha Mohan Singh swears in as cabinet minister, may get agriculture ministry!!! High time 4 celebration, MOTIHARIans.... #MyPMNaMo #ModiMinistry Direct conversation with our newly appointed PM... www.pmindia.nic.in/feedback.php?ln=hindi

(From the Facebook wall- www.facebook.com/akashmanofsky)

शिक्षा-ए-लालच

-कुमार शिवम मिश्रा

बात बिहार की है. जब भूतपूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार उर्फ सुशासन बाबू सत्ता में आये तो ताबड़तोड़ सरकारी स्कूलों में मिड-डे-मिल परोसा जाने लगा. पहले लड़कियाँ और फिर बाद में लड़कों को भी साइकिलें नसीब हुई. इस शुभ कार्य के पीछे सीएम साहब का तर्क था कि बच्चे स्कूल नहीं जाते, अतः उन्हें लालच देने के लिए हमने इस ऐतिहासिक कार्य को अंजाम दिया, इस तरह शिक्षा का विकास होगा. परन्तु, अगर मानसिकता ये है तो फिर इसी तर्ज पर फौरन बिहार के कॉलेजों में पनीर, चिकेन, मटन और मोटरसाइकिल बांटा जाना चाहिए था. पी. एच. डी. वाले बच्चे को कार ही बाँट देते. कॉलेज में एक डिपार्टमेंट ऑफ बीयर एंड रम कॉर्नर बनवा देते. इस तरह से उच्च शिक्षा को चौतरफा बढ़ावा मिलता और आज बिहार का बच्चा-बच्चा अपने नाम में डॉ. हीं नहीं लगाता बल्कि देश के सारे उच्चपदों पर आज बिहार के ही उच्च-शिक्षित लोग पदासीन होते.

नीतीश कुमार के इस्तीफे के बाद बड़े-बड़े लोगों ने ये कहा कि सूबे में विकास हुआ. लेकिन सच्चाई ये है कि लगभग अपने साढ़े-आठ साल के कार्यकाल में भूतपूर्व मुख्यमंत्री ने कुछ पुल बनवाये, कुछ बहुत ही अच्छी सड़कें बनवाई, कानून-व्यवस्था को पहले से थोड़ा ठीक किया एवं राज्य के कोने-कोने में सरकारी शराब भट्ठियों की स्थापना की और बड़े ही बेशर्मी से कह दिया कि हमने विकास किया. अगर ये विकास है तो फिर वो क्या है जो बारह सालों में मोदी ने गुजरात में किया. समय मायने रखता है. साढ़े-आठ सालों में जो हुआ उसे विकास नहीं कहा जा सकता.खैर, जिन लोगों को ये लगे कि बिहार का विकास हुआ है वो सावन में एक बार बिहार आयें, सड़क पर चलते समय जब दोनों पैर बिना ढक्कन के गटर में जायेगा तो विकास का सुखद एहसास होगा.

बतकही

बातों ही बातों में जो बात, बात बनते बनते बात बनकर बात बन जाती है उस बात के पीछे भी कोई बात हो अथवा ना हो किंतु परन्तु के संदर्भ में उस बात को बात बनाकर बातों ही बातों में उड़ा देना भी एक बात है. इसका मतलब ये हुआ कि हरेक बात बात बनें या ना बनें लेकिन बातों ही बातों में बात बनकर उड़ जाने के तत्पश्चात उस बात का निरूपण इस बात के साथ किया जाना चाहिए कि बात फिर से किसी बात को लेकर बातों ही बातों में बात ना बन जाए. इक बात मैं भी आपको बता दूँ कि जो बात मैं बाताऊँगा उस बात का सम्बन्ध भी किसी बात से होना उतना ही लाजमी है जितना कि इस बात का सम्बन्ध उस बात से. अब ये भी सत्य है कि जब वो बात भी किसी ना किसी बात से ही उभरी हुई है तो क्यूँ ना उस बात को भी इस बात के साथ बातों ही बातों में बात बनाकर उड़ा दिया जाए. खैर . . . मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ है . . . और दूसरे लफ़्जो में ये भी इक बात ही है.

कुमार शिवम् मिश्रा

कुमार शिवम् मिश्रा जीवन मैग की संपादन समिति के सदस्य हैं. आप कॉमर्स कॉलेज, पटना में अंग्रेजी स्नातक (द्वितीय वर्ष) के छात्र हैं.

www.facebook.com/kumarshivam.mishra.14

CLUB ACTIVITIES

अमेरिका में आकाश भी होगा युवा राजदूत

मोतिहारी | अकी मुश्ताक

प्रतिभा किसी उम्र की मोहताज नहीं होती। इसको साबित किया है चिरैया प्रखंड के बाराजयराम निवासी शिक्षक विजय उपाध्याय के पुत्र पन्द्रह वर्षीय आकाश कुमार ने। जामिया मिल्लिया इस्लामिया विवि, नई दिल्ली में अध्ययनरत आकाश का चयन केनडी लूगार यूथ एक्सचेंज एण्ड स्टडी प्रोग्राम 2014-15 के तहत हुआ है। वह अमेरिका के फिनिक्स शहर में रहकर मार्डटेन वीव हाईस्कूल से बारहवीं की शिक्षा पूरी करेगा। इस दौरान वे भारतीय युवा राजदूत के रूप में सांस्कृतिक आदान-प्रदान के साथ-साथ अमेरीकियों में भारतीयों के प्रति सदभाव पैदा करने का काम भी करेगा।

यूएस स्टेट डिपार्टमेंट ऑफ स्टेट्स ब्यूरो ऑफ एजुकेशनल एवं कल्चरल अफेयर्स के द्वारा वर्ष 2002 में यह कार्यक्रम शुरू किया गया था। इसके तहत प्रत्येक वर्ष विश्व के कई देशों से मेधावी छात्रों का चयन कर कल्चरल एक्सचेंज के उद्देश्य से अमेरिका भेजा जाता है। इस वर्ष युवा राजदूत के रूप में भारत से अमेरिका जाने वाले 36 छात्रों में बिहार से एक मात्र आकाश का चयन हुआ है।

चिरैया का लाल

- बतौर भारतीय युवा राजदूत करेगा सांस्कृतिक आदान-प्रदान
- 36 युवा राजदूतों में बिहार से एक मात्र आकाश का चयन

जीवन मैग के सभी पाठकों को हम बेहद ख़ुशी के साथ यह शुभ संदेश देना चाहते हैं कि जीवन मैग के मुख्य संपादक

आकाश कुमार अमेरिका में भारत की ओर से युवा राजदूत के रूप में चुन लिए गए हैं। हम आकाश जी से उम्मीद करते हैं, कि वह भारत और अमेरिका के बीच के सांस्कृतिक संबंधों को और मज़बूत बनाएँगे। जीवन मैग की पूरी टीम, पाठकों, व सभी लेखकों की ओर से जीवन मैग के मुख्य संपादक व संस्थापक आकाश कुमार को हार्दिक बधाइयाँ। - अबूज़ैद अंसारी (सह-संपादक)

Heartiest Congratulations to Our Team Member **Aminesh Aryan** for cracking the venerable B.H.U entrance exams for admissions in Honours courses. Mr. Aminesh has got 135th rank among about 50000 students who appeared in the exam. Jeevan Mag wishes you a very bright future ahead. May you shine like the most valuable star in the firmament! – **Akash Kumar (*Ed-in-Chief*)**

आपकी बात...

जीवन मैग को पत्र में सतना से उमेश कुमार मिश्रा लिखते हैं---

उमेश कुमार मिश्र,
ग्राम पोस्ट - खरमसेड़ा
अमरपाटन जिला- सतना (म.प्र.)

भ्रष्टाचार मिटाने के लिये रामराज्य के सिद्धान्त को लागू किया जाय।

भ्रष्टाचार मिटाने के लिये, गाँधी की कल्पना को साकार करने के लिये रामराज्य की स्थापना की जाय। रामराज्य की व्यवस्था से सभी मतभेदों को समाप्त किया जा सकता है। रामराज्य समदर्शी व्यवस्था है। समदर्शी तंत्र विकसित करने के लिये रामराज्य के सिद्धान्तों को लागू किया जाय। रामराज्य में समानता लाने का सूत्र विज्ञान को बताया गया है। विज्ञान से सब प्रकार की समानता लायी जा सकती है । रामराज्य मे विज्ञान का विशेष महत्व था। सभी मनुष्य गुणवान , पंडित एवं विज्ञानवान थें । दुनिया के इतिहास में बहुत सी शासन प्रणाली संचालित है, उनमें से रामराज्य अलौकिक प्रणाली है। इस प्रणाली के अवशेष रामचरित मानस में अंकित है। (जिसकी प्रेरणा से गांधी जी को सद्मार्ग मिला था) रामराज्य ने जनता को तीन प्रकार के ताप नही व्यपते थे, इसी ताप को मिटाने के लिये गांधी जी रामराज्य लाना चाहते थे।

भ्रष्टाचार भ्रष्ट विचार धारा है, इस विचार धारा को रोकने के लिये स्वदेशी शिक्षा नीति बनायी जाय। भ्रष्टाचार शोषण की साजिस है। भ्रष्ट नेताओं एवं भ्रष्ट अपसरों की मिलीभगत है। भ्रष्टाचार की मुख्य जड़ कांग्रेस सरकार की नीतियां है , भ्रष्ट नियमों को तत्काल संविधान से हटा दिया जाय । संविधान की समीक्षा कर रामराज्य के नियमों को लागू किया जाय। भ्रष्टाचार के कारण बापू ने कांग्रेस के अस्तित्व के लिये कांग्रेस शब्द का उपयोग पार्टी के रूप में करना अनुचित माना था। अटल नियमों के अभाव में जनता का शोषण किया जाता है। दोगली नीतियों से संवैधानिक पद दुर्पयोग कर काला धन कमाया जाता है। नीति निर्धारण में टाल मटोल कर भ्रष्टाचार को बढ़वा दिया जाता है। हर विभाग की ठोस नीति बनाई जाय। जिसका उल्लघन होने पर तत्काल कार्यवाही की जाय। भ्रष्टाचार के कारण आम जनता परेशान है, अब समय आ गया है - ऐसे भ्रष्ट चेहरों को बेनकाब किया जाय। देशद्रोही के श्रेणी मे रखकर अवैध संपत्ति कुर्क की जाय। जन प्रतिनिधियों एवं मंत्रियों को जनता की आख में धूल झोकने वाले कानून को खत्म किया जाय। मनमानी तरीके से लूट खसोट एवं इस बाबत अपने अनुकूल नियम बनाने की स्वतंत्रता पर रोक लगायी जाय। चोरी करे और मुकदमा न चले ऐसे भ्रष्ट सभी कानूनों को समाप्त किया जाय।

भ्रष्टाचार में लिप्त सभी विभागों की जाँच कराने का अधिकार लोकपाल को दिया जाय। न्यायपालिका एवं प्रधानमंत्री कार्यालय में भ्रष्ट तंत्र के सक्रिय मौजूद है, इनके निवारण के लिये सबकी जाँच कराने का अधिकार लोकपाल को देना परम् आवश्यक है। तभी जड़ से भ्रष्टाचार मिटाया जा सकता है। रामराज्य के बुनियादी सिद्धांतो को लागू किया जाय । बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने की ठोस नीति बनायी जाय। जीवन निर्वाह की संपत्ति सबको सुलभ हो। रामराज्य में बुनियादी परिवर्तन विज्ञान से किया जाता था। विज्ञान के बिना सामाजिक समानता नही लायी जा सकती।

कृपया हमें अपने पत्र इस पते पर भेजें-
नंदलाल मिश्रा, वीकेआरवी राव हॉस्टल, दिल्ली विश्वविद्यालय मुख्य परिसर, नई दिल्ली

आप अपने सुझाव हमें इमेल भी कर सकते हैं-
akashmanofsky@gmail.com

हमारे फेसबुक पृष्ठ के माध्यम से भी आप हमें अपने विचारों से अवगत करा सकते हैं-
www.facebook.com/jeevanmag

Debate: Israel-Palestine conflict

In the name of self-defense

-Parvez Alam

On 12th June 2014, Israel accused hamas of kidnapping 3 Israeli teens in Gush Etzion, west bank of Gaza. In return they arrested 530 Palestinian citizens. Israel launched a heavy air-strike on Gaza in the name of 'Defending itself' and then their blood-thirsty troops entered Palestinian land murdering everyone they get in the way. They call it self-defense. They defended themselves by murdering 2000 civilians including 500+ children till now. What an appreciable self-defense it is? They're accusing Hamas of killing their 'innocent civilians ' who're living on looted lands of Palestine since 1948. Was the burning of thousand villages then a pre-act of self-defense? Because Hamas wasn't even in existence back then. Maybe possible. And talking about ruthless killing perhaps butchering of people on streets, in hospitals, in mosques, ambulances etc. is not new for the people of Palestine. They've to be ready for the worst every morning they wake up.

The world esp. the western nations have funded Israel in their bloody act of killing innocents following the theory of Zionism which is itself discarded by most of Jews. And after every such massacre of thousands of Palestinians they say they're willing to set up truce, truce on what price?

Palestinians don't want truce, they want their land back, they want to live in their country without any fear of getting slaughtered any minute, and they want to see their kids grow playing instead of getting bombed in the schools, playgrounds, beaches. Can anyone answer why Palestine is not allowed to keep an army of itself like any other country? And that's the reason they're fighting.That's the reason Hamas is fighting. That's the reason PFLP (People's Front for Liberation of Palestine) & Maoist party of Palestine is fighting.They're not terrorists as branded by west controlled media but they're freedom fighters for their citizens. They're fighting for the liberation and freedom of their land, which belongs to them only. They may not have as heavy artillery as Israel but they'll win because people's resistance can never be defeated.What could be a better example of this than Vietnam?

The world's 'SUPERPOWERS' maybe supporting Israel but people aren't. The world has never seen so many protests across the globe in recent times. Many celebrities like Ronaldo, Mesut ozïl, Al puccino, John Berger, Nobel laureate Tutu and many to add on the list are standing for the truth, for the freedom of Palestine. …Continued on next page

आतंक के विरुद्ध इज़रायल की मुहिम

-अमिनेष आर्यन

इज़रायल दुनिया का एकमात्र यहूदी राष्ट्र है, ये वो यहूदी हैं जो सदियों दुनिया द्वारा सताये जाते रहे हैं। पूर्व में इनके पवित्र मंदिर दो बार रोमन साम्राज्य द्वारा ध्वस्त कर दिए गए और इनपर असभ्य होने का आरोप लगा, ईसाई इन्हें नीच मानते थे और इस तरह यहूदियों को यूरोप से निकाल दिया गया। मध्य काल मे अरब प्रायद्वीप में इस्लाम के साथ संघर्ष ने यहूदियों को अपने ख़ुद के राष्ट्र के लिए सोचने को मज़बूर कर दिया। कालांतर मे हिटलर के नाज़ीवाद ने किस तरह यहूदियों का कत्लेआम किया , जिसे दुनिया आज महाविध्वंस के नाम से जानती हैं। यहूदियों के मातृ स्थान उनसे छीन लिए गए और उन्हें दर-दर भटकने के लिए मज़बूर किया गया। वक़्त के साथ यहूदियों ने भारत, अमेरिका जैसे नवसृजित देशों में शरण ली। महान साइंटिस्ट अल्बर्ट आइंस्टाइन भी उनमें से एक थे जो हिटलर की नज़रों से बच कर अमेरिका चले गए। जेरुसलम को यहूदी अपना घर मानते हैं, यहीं पर उनका वो पवित्र मंदिर था। यह स्थान इस्लाम के लिए भी पवित्र है पैगंबर हजरत मोहम्मद यहीं से स्वर्ग की यात्रा पर गए थे और संयोगवश ईसा मसीह का जन्म भी यहीं हुआ इसलिए यह ईसाईयत का भी पवित्र स्थान हैं। दोनों ही धर्म संसार के विभिन्न क्षेत्रों मे प्रसारित और प्रतिष्ठित भी हैं जबकि यहूदियों को अपने देश के लिए सदियों लड़ना पड़ा। तीन धर्मयुद्ध हुए और इस तरह जेरुसलम धर्मों का रणक्षेत्र बन गया। अंत में वर्ष 1948 में इज़रायल के नाम से एक अलग यहूदी राष्ट्र की घोषणा की गई और जेरुसलम इज़रायल राष्ट्र की राजधानी बनी। वक़्त के साथ इज़रायल ने समृद्धि-संपन्नता-विकास-प्रतिष्ठा-शक्ति हासिल कि और मध्य-पूर्व एशिया का शक्तिशाली देश बन कर उभरा। यहाँ तक कि वो युद्ध हथियारों के सबसे बड़े निर्यातकों में से है। आज जब आतंकी हमले के ख़िलाफ उसने कारवाई शुरू कि तो दो-दो विश्वयुद्ध लड़ चुके देश मानवता कि दुहाई दे रहे है? क्या अपनी आत्मरक्षा करना गलत हैं? अपनी गजब की रक्षात्मक प्रणाली से दुश्मन के हमलों को नाकाम कर अगर वो अपने नागरिकों की रक्षा कर सकने में सक्षम है तो क्या वो गलत है? या फिर वो इसलिए गलत हैं कि इज़रायली नागरिक इस युद्ध मे हताहत नहीं हो रहे? हमास-इज़रायल युद्ध कोई आपसी रंजिश नहीं बल्कि उस परंपरा की बानगी है जिसमें धर्म को राष्ट्र का आधार माना जाता हैं और उस राजनीतिक साजिश की देन जिसमें इज़रायल से अलग एक फिलिस्तीनी राज्य की घोषणा की गई। ताज्जुब की बात देखिए संयुक्त राष्ट्र जैसे भारी-भरकम जमघट ने जेरूसलम को ही फिलिस्तीन कि राजधानी स्वीकार किया जो इज़रायल की अधिकारिक राजधानी हैं। आखिर क्यूँ? तब तो ऐसा लगता है जैसे यह युद्ध उपहार स्वरूप दिया गया हो ।

....अगले पृष्ठ पर जारी

Continued from last page…

The BDS movement has started to show its effects. According to reports, Israel's economy has lost 950 million dollars in last 2 months. But there's still a long way to go, we need to continue the boycott and Palestine needs to keep their resistance going. They'll win, sooner or late. Because they have nothing to lose now and a message to all the martyrs, "your sacrifice will never be wasted; the day is near when your future generation will breathe freely ".

And for all supporters of Israel ,
America's intellectual Noam Chomsky's words seems perfect , " People who call themselves supporters of Israel are actually supporters of its moral degeneration and ultimate destruction "
One of my Palestinian friend said , " First they said , Palestinian fight like heroes , now they'll say , heroes fight like Palestinians. "

www.facebook.com/parvez16mb

(Writer is a student of Class XII Science at Jamia Millia Islamia, New Delhi. Basically from Chhapra in Bihar, Parvez subscribes to communist ideology.)

पिछले पृष्ठ से जारी...

दुनिया बखूबी जानती हैं कि गाजा पट्टी के क्या हालात हैं गाजा पट्टी पर नियंत्रण रखने वाली हमास ने एक अलग इस्लामिक स्टेट के नाम पर जो आतंक फैला रखा है वो उस इलाके कि बदकिस्मती है कि उसकी अपनी ही निर्वाचित सरकार उनका विकास नहीं चाहती, इज़रायल पर बार-बार हमले कर हमास ने यह साबित किया है कि पवित्र इस्लाम के नाम पर तुच्छ लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए पूरे फिलिस्तीनी राज्य को युद्ध में झोंकना चाहते है। यह उसी तरह है जैसे अफगानिस्तान मे तालिबान और गुलाम कश्मीर के अलगाववादी आतंकी। इसलिए इज़रायल आतंक के ख़िलाफ युद्ध कर रहा हैं ना कि फिलिस्तीन के खिलाफ। इस बात का यह सबूत है की उसी फिलिस्तीन के वेस्ट बैंक इलाके जो हमास के शासन से मुक्त हैं और जहाँ शान्ति छाई है। भारत- इज़रायल संबंध भारत को रक्षा क्षेत्र मे सक्षम बनाती हैं। ऐसे मे काँग्रेस चाहती है कि हम इज़रायल का विरोध करें जबकि उसी की सरकार में इज़रायल के साथ कई अहम रक्षा समझौते हुए। हमारी अंतर्राष्ट्रीय नीति भले ही शांतिमूलक हो लेकिन भारत का इस मामले में तटस्थ बने रहना ही लाभदायक हैं।

www.facebook.com/aminesh.aryan

(लेखक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में राजनीतिशास्त्र स्नातक प्रथम वर्ष के छात्र हैं। मज़ेदार बात यह है कि मूल रुप से बिहार के हाजीपुर से संबंध रखने वाले अमिनेष भी कम्युनिस्ट विचारधारा में विश्वास रखते हैं।)

कार्टून- विख्यात बड़बड़िया
www.facebook.com/vikhyat.kumar.77

चलते-चलते

"जीवन मग" के इस रंग-बिरंगे अंक के अंत में चलते-चलते क्या भूलूं, क्या याद करूँ. बीते चार महीने की दुनिया ने कई उलटफेर देखे. हर बार की तरह कुछ कुछ दर्दनाक तो कुछ खुशनुमा. गज़ा फिर से खून की दरिया में उतर चुका है. उधर ईराक में चरमपंथियों ने एक बड़े इलाके पर कब्ज़ा जमा लिया है. जिधर देखिये सुकून कम ज्यादा मातम छाया हुआ है. अशांति और नापाक इरादों के इन वाहकों के खिलाफ़ भारत ने हल्की सी आवाज़ भरी है. आप इसकी जैसी भी विवेचना करें मैं तो शांति के मार्गदर्शक सत्य को ही समर्थ और सार्थक दोनों मनाता हूँ. उधर रूस और युक्रेन सीमा पर मलेशियाई विमान को ध्वस्त करने के पीछे जिसका भी हाथ रहा हो उसे मानवता के विरुद्ध मानकर दंडित किया जाना बेहद जरूरी है. इन सब को देखकर कभी-कभी लगता है कि उस आइन्स्टाइन कल्पनीय विश्व-युद्ध का समय निकटासन्न है. ऐसे में विश्व को शांति का पाठ पढ़ाने वाली गांधी-भूमि हरप्रकारेन ख़ामोश क्यों है ? इधर भारत में हुए आम चुनाव में बीजेपी को भरी बहुमत मिली और नरेन्द्र मोदी देश के प्रधानमंत्री बने. बीते कुछ महीनों से तकरीबन निष्क्रिय हो चुकी हमारी विदेश नीति अब सुसुप्तता से बाहर आती दिख रही है. रेल किराया और मंहगाई में बढोत्तरी के साथ व बावजूद हमें कई आशाएं हैं इस उम्मीदीं सरकार से. ज़ाहिर है आपको भी होगा, है ना ? और बढ़ते दुष्कर्मों पर अब सिर्फ बोलना-सुनना, पढ़ाना या कोई क्रांतिकारी लेख लिख देना नाकाफी है. हमें जमीनी तौर पर कुछ करने की जरूरत है और यह कुछ हम सब के विवेक की सीमा से परे भी नहीं है. ग्लासगो अभी अभी राष्ट्र मंडल खेल संपन्न हुए हैं. भारत का प्रदर्शन पिछले खेलों के मुकाबले निराशाजनक रहा है. इसके सबब की शिनाख्त और सुधार का दायित्व सिर्फ खिलाड़ियों और खेल संस्थाओं का नहीं अपितु सरकार और हम बुद्धिजीवियों का भी है. वहीँ फीफा विश्वकप ने पुनः एक सन्देश दिया- जीत संयुक्त प्रयास की होती है एकल लगन या प्रतिभा की नहीं. वहीं फाइनल की हार को अपने भावशून्य चेहरे पर समेटा मेसी बहुत कुछ छोर गया हम दर्शकों के लिए जो फूटबाल के मैदान के बाहर भी उतना ही प्रासंगिक और अनुकरणीय है. जब यह लेख लिख रहा हूँ दुनिया फ्रेंडशिप डे मना रही है. प्रेम के विविध रूपों प्यार, स्नेह, श्रद्धा और भक्ति से भी ऊपर है मित्रता का स्थान. जीवन के इस मोड़ पर आपका और कोई साथ दे या ना दे जीवन मग तो आपका हमसफ़र है और रहेगा. समस्त चराचर को आगामी पर्व-त्योहारों का जीवन मग परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ. आपके संदेशों का बेसब्री से इंतज़ार रहेगा.

अगले अंक तक...... नमस्कार!

नंदलाल मिश्रा

(प्रबंध संपादक)

www.facebook.com/sumit.nandlal

www.jeevanmag.com

चंद शेर अर्ज

बयां करता हूँ क़िस्सा जब मुहब्बत का मैं लिखता हूँ
क़लम भी ख़ूब रोता है, वरक़ को दर्द होता है

बहोत ख़ामोश रहता है मगर नादां नहीं है "ज़ैद"
उसे आवाज़ बनना है जिसे सदियों सुना जाए

यूँ हँसकर मिलने से मुझसे तेरी फ़ितरत छुप नहीं सकती
मुझे पढ़ना ख़ूब आते हैं मुस्कुराहटों के सबक़ सारे

मेरी ग़ज़लों में असर पहले सा बाक़ी ना रहा "ज़ैद"
मुझे ये चाह है फ़िर से कोई दिल तोड़ दे मेरा

अबूज़ैद अंसारी

सह-संपादक

JEEVAN MAG WEB NEXT

टीम अन्ना की कोर कमिटी के सदस्य तथा अब भाजपा नेता मुफ़्ती शमून क़ासमी से रु-ब-रु जीवनमैग.कॉम के आकाश और अमिनेष

पूरा साक्षात्कार सुनने के लिए आयें हमारी वेबसाइट पर-

http://www.jeevanmag.com/2014/06/bjp-leader-mufti-shamoon-qasmi-interviewed-by-akash-aminesh-jeevanmag.html

From Mobile, Directly go to-

m.jeevanmag.com